भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

सद्भावना

राजभाषा पत्रिका वर्ष - 2024

भारतीय जीवन बीमा निगम
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री सलिल विश्वनाथ

(कार्यकारी निदेशक मा.सं.वि./सं.वि.)

प्रधान संपादक

सुश्री एस. गिरिजा

सचिव (मा.सं.वि.)

संपादक

श्री त्रिलोकानन्द मिश्र

उप सचिव (राजभाषा)

सहयोग

श्री अनुज मिश्र

श्री हिमांशु

श्री परविंदर कुमार

सुश्री प्रज्ञा कुलकर्णी

सुश्री नीलम राशि लुगुन

निगम गीत

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे ।

सम्यक संचय और निवेशन
जन जन का ही हित संवर्धन
निगम नीति का उच्च लक्ष्य है
व्यक्ति और परिवारोत्थान ।

लोक हितैषी सेवा दीक्षा
जन मन प्रेरित सतत सुरक्षा
योगक्षेम ही परमध्येय है
निगम हमारा प्रिय संस्थान ।

उठो निगम के सच्चे सेवक
अभिकर्ता जन और प्रबंधक
बुला रहे है कार्य लोकहित
तुम पर निर्भर जन कल्याण ।

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे ।

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

भारतीय जीवन बीमा निगम
केन्द्रीय कार्यालय की
राजभाषा पत्रिका वर्ष-2024

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है, संपादक या भारतीय जीवन बीमा निगम का उससे सहमत होना जरुरी नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रमांक		पृष्ठ क्रमांक
1	अनुक्रमणिका	3
2	सीईओ एवं एमडी का संदेश	4
3	प्रबंध निदेशक गणों का संदेश	5-8
4	कार्यकारी निदेशक का संदेश	9
5	प्रधान संपादक की कलम से	10
6	संपादकीय	11
7	अपनी मूल प्रकृति अपनाएं, जीवन में आनंद पायें	12-13
8	कहीं आपके आस-पास Emotional Vampire तो नहीं ?	14
9	राष्ट्रभाषा हिंदी, हिंदी का परिचय (कविता)	15
10	राम तुम्हें फिर आना होगा (कविता)	16
11	मेरे प्यारे पापा (कविता)	17-18
12	सुरक्षा से परे: आर्थिक विकास में बीमे की भूमिका की खोज	19
13	घरोंदे में लौटेते पक्षी	20
14	अपना सा कोई, कायनात (कविता)	21
15	डिजिटल इनोवेशन	22
16	टेक्नोलोजी का विकास	23
17	“बचपन और छुट्टियाँ”	24
18	देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी का हिन्दी प्रेम	25-26
19	“जिन्दगी एक खोज” (कविता)	27
20	संकल्प (कविता)	28
21	डिजिटल परिवर्तन में हिन्दी का स्थान	29
22	भारतीय जीवन बीमा निगम की ई-सेवाएं	30-32
23	भारतीय जीवन बीमा निगम 3.0 में डिजिटल परिवर्तन का महत्व	33-35
24	निगम के व्यवसाय विकास में राजभाषा का महत्व	36-37
25	सबकी हिन्दी, सब हिन्दी के (कविता)	38-39
26	राजभाषा पुरस्कार	40
27	हिंदी दिवस	41
28	राजभाषा विविध गतिविधियां	42-43

सीईओ एवं एमडी महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष भी निगम के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारी भाषा, संस्कृति और व्यवसायिक मूल्यों को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण मंच है। हिंदी, जो हमारी राजभाषा और पहचान का एक अभिन्न अंग है, न केवल सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है बल्कि हमारे व्यावसायिक संवाद और संचालन में भी इसकी विशेष उपयोगिता है।

आज के बदलते समय में, जब हम डिजिटल युग में कदम रख रहे हैं, हिंदी का प्रयोग व्यवसाय के प्रत्येक क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ छू रहा है। यह न केवल हमारे विचारों को स्पष्टता से प्रस्तुत करती है, बल्कि हमारी व्यवसायिक संभावनाओं को भी गति प्रदान करती है। निगम की इस वर्ष की थीम "डिजिटल इनोवेशन - स्वीकार्यता, प्रतिबद्धता, कुशलता" के संदर्भ में, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम हिंदी को भी डिजिटल प्लेटफार्मों पर पूरी कुशलता से अपनाएं। डिजिटल नवाचार में हिंदी की भागीदारी न केवल हमारी पहचान को सुदृढ़ करेगी, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर स्वीकार्यता भी प्रदान करेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी हिंदी के प्रयोग को और अधिक सशक्त बनाने के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे और इसे हमारी व्यावसायिक प्रक्रियाओं का अभिन्न अंग बनाएंगे। "सद्भावना" पत्रिका का यह अंक हमें हिंदी के महत्व को समझने और इसे अपने कार्यक्षेत्र में और भी व्यापक रूप से अपनाने की प्रेरणा देगा।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक साबित होगा।

शुभकामनाओं सहित,

सिद्धार्थ महान्ति
(सीईओ एवं एमडी)

विपरीत परिस्थितियाँ मनुष्य का स्वयं से परिचय करा देती हैं।

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा इस वर्ष भी राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारी संस्कृति और भाषा को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह हिंदी के महत्व को हमारे दैनिक कार्यों में निरंतर शामिल करने की प्रेरणा भी देती है।

हिंदी, हमारी राजभाषा होने के नाते, हमारे सभी कार्यों और संवादों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निगम में इसका प्रयोग न केवल हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है, बल्कि यह हमारे कार्यों की सरलता और प्रभावशीलता को भी बढ़ाता है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दैनिक कार्यों जैसे टिप्पणियों का प्रयोग हो, पत्राचार हो या डिजिटल माध्यमों का उपयोग आदि में हिंदी का अधिकतम प्रयोग हो । इससे न केवल कार्यकुशलता बढ़ेगी, बल्कि हमारी भाषा की गरिमा में भी वृद्धि होगी।

भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक राजभाषा लक्ष्यों के तहत हमें यह प्रयास करना होगा कि हम उन सभी निर्देशों का पालन करें और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पूरी प्रतिबद्धता से कार्य करें। यह केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि हिंदी के प्रति हमारी निष्ठा और समर्पण का प्रमाण भी है।

"सद्भावना" के इस प्रकाशन के लिए मेरी ओर से ढेरों बधाई और शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक सभी को हिंदी के प्रति जागरूक करने और इसके प्रयोग को प्रोत्साहित करने में सफल रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

एम. जगन्नाथ
प्रबंध निदेशक

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय सहयोगियों,

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सशक्त करने और इसे हमारे दैनिक कार्यों में और अधिक प्रभावी रूप से सम्मिलित करने का उत्कृष्ट माध्यम है।

आज के डिजिटल युग में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है, और यह आवश्यक है कि हम हिंदी को भी इन तकनीकी माध्यमों में समाहित करें। हमारे निगम द्वारा ई-फ़ीप में हिंदी का प्रावधान किया गया है, जिससे हिंदी में कार्य करना अब और भी सरल हो गया है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि ई-फ़ीप में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करें और अपने कार्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी में संपादित करें। इससे न केवल हमारी राजभाषा को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि कार्यों में भी पारदर्शिता और कुशलता आएगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "सद्भावना" पत्रिका का यह अंक हिंदी के डिजिटल उपयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ हमें इस दिशा में और अधिक जागरूक करेगा।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे आशा है कि यह अंक सभी के लिए अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

तबलेश पांडे
प्रबंध निदेशक

आकाश में मेघ भले ही कितने भी घने और काले क्यू न हो, दिन को रात नहीं बना सकते हैं।

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय सहयोगियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारी राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी निष्ठा को व्यक्त करती है, बल्कि हमें इस दिशा में और अधिक सक्रिय रूप से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करती है।

आज हिंदी का उपयोग केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी इसकी लोकप्रियता और प्रभाव में निरंतर वृद्धि हो रही है। हिंदी भाषा विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में सम्मान और स्वीकार्यता प्राप्त कर रही है। हमें भी निगम में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देकर, इस दिशा में निरंतर अग्रसर रहना है।

वर्तमान समय में हिंदी में कार्य करना अत्यधिक सरल हो गया है। कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरणों पर "ट्रांसलिट्रेशन" के माध्यम से हम आसानी से हिंदी में टाइप कर सकते हैं। यह सुविधा हमारे दैनिक कार्यों में हिंदी के उपयोग को और सहज बनाती है। इसलिए, मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इस सरलता का लाभ उठाएं और अपने कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन और इसे उपयोगी बनाने के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक सभी के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

सतपाल भानू
प्रबंध निदेशक

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा अनुभाग की पत्रिका "सद्भावना" के द्वारा आपसे जुड़ते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका हमारे निगम में हिंदी के निरंतर बढ़ते प्रयोग और इसकी महत्ता को दर्शाने वाला एक महत्वपूर्ण मंच है।

हमारे निगम ने पिछले वर्षों में हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, और मुझे गर्व है कि आप सभी ने इसमें सक्रिय भागीदारी निभाई है। अब समय आ गया है कि हम पूर्व में किए गए इन प्रयासों को न केवल जारी रखें, बल्कि उन्हें और अधिक गति दें। हिंदी को जन-जन की भाषा बनाने के लिए हमें इसे अपने सभी व्यावसायिक कार्यों और संवादों में निरंतर उपयोग में लाना चाहिए।

व्यवसाय में सफलता तब तक अधूरी है जब तक हम अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँचते, और हिंदी वह माध्यम है जो हमें इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। हिंदी को अपनाकर हम न केवल अपने ग्राहकों और हितधारकों के साथ बेहतर संवाद स्थापित कर सकते हैं, बल्कि हमारे व्यवसाय की पहुंच को और व्यापक बना सकते हैं।

"सद्भावना" पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रोत्साहित करेगा और हमारे सभी सहकर्मियों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

आर. दुरैस्वामि
प्रबंध निदेशक

क्षमा वीरों पर ही शोभा देती हैं कायरों पर नहीं।

कार्यकारी निदेशक महोदय का संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है की केन्द्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में मौलिक एवं सृजनात्मक लेखों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में केन्द्रीय कार्यालय राजभाषा विभाग की विभिन्न उपलब्धियों को भी प्रस्तुत किया गया है। इस पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन के प्रचार प्रसार के लिए रचनात्मक एवं सराहनीय प्रयास है।

यह अत्यंत गर्व की बात है कि निगम ने अपने ग्राहकों को बचत और बीमा सुरक्षा से जोड़कर देश के आर्थिक विकास में प्रमुख भूमिका निभाई है। हमारा निगम न केवल देश का सबसे बड़ा बीमा संस्थान है बल्कि यह देश में अत्यधिक लोकप्रिय एवं सर्वाधिक भरोसेमंद बीमा कम्पनी है। हमारे बीमाधारक निगम का आधार है और इसमें ग्राहक सेवा सर्वप्रमुख है। अपने ग्राहकों की जरुरत एवं अपेक्षाओं को समझकर उन्हें उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने के लिए लगातार संवाद बहुत आवश्यक है, जिसे हम हिंदी में सरलता, सहजता एवं प्रभावशाली ढंग से कर सकते हैं।

हिंदी पूरे देश में बोली और समझी जाती है, यह एक सरल, समर्थ एवं वैज्ञानिक भाषा है। आज हिन्दी में काम करने के लिए हमारे पास सभी आधुनिक तकनीकी साधन भी उपलब्ध हैं, इनका प्रयोग कर हिन्दी पत्राचार व हिन्दी ई-मेल में वृद्धि कर सकते है। हमारा संवैधानिक दायित्व के साथ नैतिक कर्तव्य भी है कि हम अपने दैनिक कामकाज में इसका अधिकाधिक प्रयोग करें जिससे हम भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा नियम-अधिनियम का पूर्णत: पालन करते हुये, भारत सरकार द्वारा निर्धारित इस वर्ष के वार्षिक लक्ष्यों को शत-प्रतिशत प्राप्त कर सकें।

हम निगम में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्दता के साथ काम करने के लिए सदैव प्रयासरत हैं। वर्ष 2023-24 में हमारे 35 कार्यालयों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। साथ ही गत वर्ष निगम के विभिन्न कार्यालयों में संसदीय समिति के 12 निरीक्षण सफलता पूर्वक संपन्न हुए जिसमें निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की गई। निगम की ये उपलब्धियां राजभाषा के प्रति आप सभी की निष्ठा और समर्पण का प्रतीक है और मैं इसके लिए आप सभी को हार्दिक अभिनंदन एवं बधाई देता हूँ।

मैं राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन के प्रचार-प्रसार में मददगार सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित,

सलिल विश्वनाथ
कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि./सं.वि.)

प्रधान संपादक की कलम से

केन्द्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के माध्यम से संवाद स्थापित करते हुये मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। साथियों यह पत्रिका न केवल राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है बल्कि यह हमारे साथियों को अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करने के लिए सुअवसर भी प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि सद्भावना पत्रिका अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होगी।

हिन्दी आज पूरे देश में एक आम संपर्क की भाषा बन चुकी है और आज के तकनीकी युग में सभी व्यावसायिक क्रियाकलापों एवं ग्राहकों से संवाद के केन्द्र बिन्दु में हिन्दी ही है। आज बड़ी बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी अपने अपने उत्पाद का प्रचार प्रसार में हिन्दी का उपयोग कर रहीं हैं। हमें अपने ग्राहकों की जरूरतों को समझकर उन्हें अपने बीमा उत्पाद बेचना और उन्हे सेवा प्रदान करने के लिए हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग बहुत आवश्यक है।

अपने दैनिक कामकाज में राजभाषा का प्रयोग न केवल हमारा संवैधानिक दायित्व है बल्कि यह नैतिक कर्तव्य भी है। आज जब हम कंप्यूटर क्रांति के युग में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं, हम अपने ग्राहकों को विभिन्न प्रकार की सेवाएँ वेबसाइट के माध्यम से भी प्रदान कर रहें हैं। अतः ग्राहकों एवं निगम से जुड़े सभी स्टेक होल्डर से बेहतर संवाद के लिए निगम की वेबसाइट पर हिन्दी में भी जानकारी अवश्य उपलब्ध कराएं। हम अपने ग्राहकों से संपर्क के लिए मोबाइल पर हिन्दी में एस.एम.एस. भेज रहे हैं और पत्राचार में कम्प्यूटर से स्वजनित ई-मेल भी भेज रहे हैं। आज हिन्दी में काम करने के लिए बहुत सारे तकनीकी टूल्स हमारे सामने उपलब्ध हैं। बस जरूरत इस बात की है कि हम अपने कार्यालय के कामकाज में इनका अधिकाधिक उपयोग करें।

हिन्दी हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है, यह आज न केवल संवाद का साधन है बल्कि यह व्यवसाय का सशक्त माध्यम भी है। सद्भावना पत्रिका इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जो हमारे हिन्दी संबंधी प्रयासों और उपलब्धियों को प्रस्तुत करती है।

सद्भावना पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के लिए शुभकामनायें ।

एस. गिरिजा
सचिव (मा.सं.वि./सं.वि.)

मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी विफलता हैं उसका असत्यवादी होना।

संपादकीय

राजभाषा गृह पत्रिका सद्भावना का नवीन अंक समर्पित करते हुये मुझे अत्यंत हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है। सर्वप्रथम पत्रिका के प्रकाशन हेतु सहयोग प्रदान करने के लिए सभी सहकर्मियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी सृजनात्मक रचनाओं से इस पत्रिका का प्रकाशन सफल हुआ है।

साथियों, हम सभी निगम में कार्यालय के कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन का पूरी निष्ठा से पालन कर रहे हैं और हमारे 35 कार्यालयों को भारत सरकार गृह मंत्रालय एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, इस गौरवशाली उपलब्धि के लिए सभी पुरस्कार प्राप्त करने वाले कार्यालय बधाई के पात्र हैं।

दोस्तों निगम की स्थापना "योगक्षेमं वहाम्यहम" के संदेश के साथ हुई और तब से आज तक हमने देश के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच कर "सम्यक संचय और निवेशन, जन-जन का ही हित संवर्धन" के लक्ष्य के साथ जन-जन को अपनी इस यात्रा में शामिल किया। यह आज भी देश की सबसे बड़ी बीमा कंपनी है और आज जब हम वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रतिज्ञा ले चुके हैं, तो इस मंजिल का रास्ता देश के प्रत्येक व्यक्ति के सामूहिक प्रयास, भागीदारी एवं प्रगति से होकर ही गुजरता है। इसमें भाषा संचार का प्रमुख माध्यम होने के साथ-साथ हमें एक-दूसरे को अपने विचार, अपेक्षाओं अथवा भावनाओं से अवगत करवाने में भी सहायता करती है। आजादी का इतिहास साक्षी है कि हिन्दी ही एक ऐसा राजमार्ग एवं वह परिवहन व्यवस्था है, जिससे हम जन-मानस के दिलों तक पहुँचकर, हर व्यक्ति को इस आर्थिक क्रांति से जोड़ सकते हैं जिसमें निगम की भी प्रमुख भूमिका होगी ।

एलआईसी ने "हम जानें, भारत को बेहतर" की ताकत को समझते हुये "बीमा में हिंदी और हिन्दी में बीमा" को अपनाकर ग्राहक की आवश्यकताओं को समझा। निगम में ग्राहक को सेवा प्रदान करने और प्रचार प्रसार में हिन्दी भाषा को माध्यम बनाया और उसी के अनुरूप अपनी पॉलिसियों और विज्ञापनों का निर्माण किया। एलआईसी के हिन्दी में दूरदर्शन और सोशल मीडिया में लोकप्रिय विज्ञापन जैसे "जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी" तथा "दिल की सुनो, एलआईसी चुनो", और "न चिंता ना फिकर, न है डर, ये वादा है हमारा हरदम..." लोगों को सीधे दिलों से जोड़ते हैं।

निश्चित रूप से आज हिन्दी, रोजी-रोटी की भाषा बन चुकी है। हिन्दी में भावना और संभावना दोनों प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। हिन्दी जहां एक सरल और समृद्ध भाषा है जिसमें सभी भाषाओं के शब्द समाहित करने की शक्ति है तथा देश को एकता की कड़ी में पिरोने की भी क्षमता रखती हैं वहीं यह वैज्ञानिक दृष्टि से भी परिपूर्ण है क्योंकि इसमें जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। बस हमें राजभाषा को तकनीक के साथ-साथ हर क्षेत्र में उपयोग में लाने के जरूरत है, किसी ने सही कहा है-

पिछड़ जाती हैं भाषाएँ नयेपन से जो डरती हैं, नवाचरों को अपनाएं तभी हिन्दी बढ़ेगी ।
ये है तकनीक, कारोबार और विज्ञान की दुनिया, जो इनके साथ चलेगी तो हिन्दी बढ़ेगी ।।

त्रिलोकानन्द मिश्र
उप सचिव (राजभाषा)

अपनी मूल प्रकृति अपनाएं, जीवन में आनंद पायें.....

अक्सर हम कोशिश करते हैं कि स्वयं को ऐसे बदलें कि लोग हमें अच्छा कहें। बचपन में हम स्वयं को माता-पिता, गुरु व अग्रजनों के अनुरूप बदलने का प्रयास करते रहे, फिर युवावस्था में पत्नी व अन्य परिचितों, रिश्तेदारों के अनुरूप, वृद्धावस्था में अपने ही बच्चों के अनुरूप। सारा जीवन हम बदलते ही रहे पर क्या कभी दूसरों की निगाह में अच्छे हो सके ?

हमसे जुड़े अधिकांश लोग यही चाहते हैं कि हम उनके अनुरूप बदल जाएँ। हम कोशिश करते भी हैं परन्तु कभी-कभी हमको लगता है कि हम स्वयं को कितना भी क्यों न बदल लें, कुछ लोग हमसे फिर भी असंतुष्ट ही रहते हैं क्योंकि उनकी हमसे अपेक्षाएं बदलती रहती हैं। हम एक क्षेत्र में उनके अनुरूप बदलते हैं तो वे हमसे दूसरे क्षेत्र में बदलने की अपेक्षा करने लगते हैं। इस बदलाव के दौर में हम अपनी मूल प्रकृति को ही भूल जाते हैं। इस बदलाव की अनवरत अपेक्षा में हम यह भी नहीं सोचते कि क्या हम अपनी मूल प्रकृति से दूर हटकर प्रसन्न व संतुष्ट रह सकते हैं ? कदापि नहीं, क्योंकि जिस प्रकृति ने हमें जन्म दिया, हमारा मूलभूत कर्त्तव्य उसी प्रकृति को बनाये रखने का है, न कि उसे बदलने का। वस्तुतः उस मूल कृति को बदलना उस जन्मदात्री प्रकृति का अपमान है। क्या हमने कभी किसी चित्रकार की बनायी मूल कृति में बदलाव किया है ? लोग इसे कैसा समझते हैं ? परन्तु लोग प्रकृति की अनुपम कृति (मानव) से चाहते हैं कि वह स्वयं को उनके अनुरूप बदल ले ताकि उन्हें सुविधा हो, उन्हें बदलना ना पड़े और वे अपनी मर्जी से कार्य कर सकें। दरअसल हम स्वयं से जुड़े हर व्यक्ति को बदल देना चाहते हैं जबकि हम स्वयं को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहते। गोया की हम जूते पहनने की अपेक्षा पूरी धरती पर गलीचा बिछाए जाने की वकालत करते हैं।

वस्तुतः हम उसी रूप में अद्भुत, अतुल्य व अतिविशिष्ट हैं जिसमें हमें कुदरत ने जन्म दिया है इसीलिए हमारा बेहतरीन स्वरुप हमारी अपनी मूल प्रकृति में रहना ही है। किसी की तरह स्वयं को बदल जाने की अपेक्षा को पूर्ण करने से पहले अपने स्वविवेक से जानें कि क्या बदलना हमारे हित में लाभदायक होगा ? यह लाभ किसी भी प्रकार का हो पर हमें सुखद लगना चाहिए। दूसरों के बारें में न सोचें की उन्हें कैसा लगेगा ? हमेशा वही करें जिससे आप ख़ुशी महसूस करते हैं। दूसरों से अलग होने से बिलकुल न डरें बल्कि औरों के जैसा होने से डरें क्योंकि कुदरत ने हर प्राणी को अपनी तरह से दूसरों से अलग व विशिष्ट बनाया है। इसीलिये हर व्यक्ति में कुछ ना कुछ खास होता ही है। आपका परम कर्त्तव्य है की आप कुदरत की उस विशिष्टता को बनाये रखें।

इसके साथ यह भी अत्यंत आवश्यक है की हम भी अपने स्वजनों से व्यवहार करते समय ध्यान रखें कि हम भी कभी औरों को बदलने का प्रयास न करें। उनको वैसा ही बना रहने दें जैसे वो हैं। साथ ही औरों को भी स्वयं को बदलने की इजाजत न दें। यदि हम उनको बदलने का प्रयास करेंगे तो निश्चय ही वे भी हमें बदलना चाहेंगे। ध्यान रखें की यही वास्तविक प्रेम है की जो व्यक्ति जैसा है, उसे वैसा ही रहने दें।

अपने मूल रूप में रहकर हम तनावमुक्त जीवन का आनंद ले सकते हैं। याद रखें की हमारे बदलने से दूसरों को लाभ होता है जबकि हमको अपना मूल व्यक्तित्व खोने का नुकसान होता है। यदि स्वयं को बदलने के निरर्थक प्रयास की जगह हम उन गतिविधियों पर ध्यान दें तो बेहतर होगा जिनसे हमारे प्रकृतिप्रदत्त स्वरुप को पूर्णता मिलती है यानी जिन कार्यों से वास्तव में हमें ख़ुशी मिलती है या हमारा जीवन बेहतर होता है। याद रखें, हमारे जीवन का समय निश्चित है, इसे किसी और की इच्छा के अनुरूप जीने में ना बितायें। आरम्भ में यह हमारे लिए कठिन होगा लेकिन धीरे-धीरे यह हमारे लिए आसान होता जाएगा और हमको स्वयं पर गर्व होगा कि हम अपनी मर्ज़ी का जीवन जी रहे हैं।

कभी कभी हमें यह ग़लतफ़हमी हो जाती है किदूसरे जो हमारे बारे में सोचते हैं वही सच है जबकि हमारे बारे में दूसरों की राय उनके

व्यक्तित्व को दर्शाती है न की हमारे व्यक्तित्व को। हम जब भी कोई निर्णय लेते हैं तो कुछ लोग उससे प्रसन्न होते हैं और कुछ नाराज़। हम कितने भी अच्छे निर्णय लें पर सबको प्रसन्न नहीं कर सकते। यदि हम अपने अनुसार निर्णय लेते हैं तो हम कम से कम खुद को तो प्रसन्न कर पायेंगे। यही सही है क्योंकि हमारी प्रथम जिम्मेदारी स्वयं को प्रसन्न रखना ही है। इस संबंध में कुछ सहायक बिंदु प्रस्तुत हैं-

1. ऐसी कम से कम 10 चीजें लिखें जो आपको अपने बारे में पसंद हों। जब भी समय मिले, इनको पूरा करें।
2. हम जैसे हैं उसी में प्रसन्न रहें परन्तु अपनी कमियों/अवगुणों पर ध्यान देकर इन्हें सुधारें ताकि आप बेहतर आनंद प्राप्त कर सकें।
3. जैसे आप दिखते हैं, उसी में प्रसन्न रहें। कृत्रिमता न ओढ़ें।
4. अपनी सूरत/सीरत से प्रसन्न रहें। अपने शरीर एवं चेहरे से प्रेम करें।
5. किसी को भी अपना आत्मसम्मान को ठेस पहुचाने की इजाजत न दें, यहाँ तक की खुद को भी नहीं। इसका हमेशा ध्यान रखें।
6. दृढनिश्चयी बनें। विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं पर विश्वास रखें।
7. अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें, नियमित व्यायाम करें व पौष्टिक व अधिक से अधिक प्राकृतिक भोजन लेने का प्रयास करें।
8. रचनात्मक आलोचना को धन्यवाद सहित स्वीकार करें और आवश्यक सुधारात्मक कदम उठायें।
9. स्वयं व दूसरों को उनकी गलतियों हेतु क्षमा करना सीखें क्योंकि कोई भी सम्पूर्ण नहीं होता। उदार बनें, अपने आस-पास के लोगों की हर संभव मदद करें। इससे आपको अपार ख़ुशी प्राप्त होगी।
10. जिनका हमारे जीवन में थोड़ा भी योगदान हो, उनका आभार अवश्य प्रकट करें।
11. जिन्होंने हमको अपने मूल स्वरुप में स्वीकार किया हो, उनका हार्दिक आभार अवश्य प्रकट करें।
12. हँसना/मुस्कुराना कभी न भूलें। चुटकुले सुनें, सुनाएँ, हास्य से परिपूर्ण लोगों के साथ रहें।
13. किसी भी कठिन परिस्थिति में निर्णय अपनी व्यक्तिगत पारिस्थितियों के अनुसार लें और यह न सोचें कि लोग क्या कहेंगे ?
14. जब भी लगे की जीवन में कुछ बदलाव लाया जाना चाहिए तो कुछ ऐसे सकारात्मक बदलाव अवश्य लायें जिन्हें अपनाकर हम पहले से बेहतर, सुखद, आनंददायक और संतुष्ट महसूस कर सकें।

दरअसल अपनी मूल प्रकृति बनाए रखना एक उपलब्धि ही है क्योंकि हर पल हम पर चारों ओर से बदलने का दवाब होता है। एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार."To be yourself in a world that is constantly trying to make you something else is the greatest accomplishment."

इसलिए जीवन में हम जो कुछ भी कर सकते हैं, उनमें सबसे बेहतर है की हम स्वयं को वैसा ही बनाये रखें जैसे की हम हैं। यदि हम दूसरों के जैसा होने का प्रयास करेंगे तो हम उस अद्भुत प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पायेंगे जो प्रकृति ने हमको प्रदान की है। अत: अपनी मूल प्रकृति के अनुरूप रहकर हम अपनी अद्भुत प्रतिभा का आनंद लें।

यदि अब तक हम स्वयं को औरों की ख़ुशी के लिए बदलते रहे हैं तो अब खुद के अनुरूप जीकर देखें। यदि आपको यकीन नहीं तो एक बार अपनी मूल प्रकृति के अनुरूप जीकर देखें! प्राप्त होने वाली ख़ुशी ..... इतनी सुखद, इतनी आश्चर्यजनक होगी कि आपने कभी सोचा भी न होगा।

मोहन लाल गुप्ता (मौज)
टंकक, विधि विभाग,
जयपुर मंडल कार्यालय प्रथम

कहीं आपके आस-पास Emotional Vampire तो नहीं?

"क्या हुआ? उदास क्यों बैठी हो? वाणी ने पूछा। थोड़ी ना-नुकुर करने के बाद नमिता ने उसे बताना शुरू किया कि वह आजकल अच्छे से काम में ध्यान नहीं लगा पा रही है। ऑफिस में भी किसी काम को शुरुआत करती है तो उस काम को समझ नहीं पाती या कोई रुकावट आ जाती है या उसे काम को करने के बारे में सिर्फ सोचती रहती है। उसे यह भी लगता है कि दुनिया के सब परेशानियां उसे पर ही आ गई है और दुनिया के सब लोग उसे परेशान करने में लगे हुए है। यह सुनकर वाणी थोड़ा मुस्कुरायी और नमिता को समझाना शुरू किया कि ऐसा नहीं है। अगर वह कोई काम शुरू करती है तो पहले उसे काम को पूरा समझे और एक टाइम टेबल बनाकर उसे काम को पूरा करें और रही बात की सब उसके दुश्मन है, यह विक्टिम मानसिकता की निशानी है। काफी देर समझाने के बाद नमिता को बात समझ में आई और उसका मूड थोड़ा अच्छा हुआ और फिर वह अपने घर चली गई।

लेकिन नमिता के जाने के बाद वाणी बड़ा थका थका सा महसूस कर रही थी। ऐसा अक्सर होता था कि नमिता वाणी से मिलकर उसे अपनी दिक्कतें, परेशानियां बताती थी और वाणी पूरी सब्रता से उसकी बात को सुनती और यथाचित सुझाव देती। लेकिन कुछ दिनों से नमिता से बात करने के बाद वाणी अपने आप को भावनात्मक और मानसिक तौर पर थका हुआ महसूस करती थी और उसे लगता था कि उसके अंदर की सारी पॉजिटिव एनर्जी खत्म हो गई है और वह किसी काम को करने के लिए अभी सक्षम नहीं है।

आइये समझते हैं कि ऐसा क्यों होता है? इस कहानी में नमिता एक इमोशनल वैंपायर (Emotional Vampire) है। इमोशनल वैंपायर कौन होते हैं? इमोशनल वैंपायर वे लोग होते हैं जो जानबूझकर या अनजाने में आपकी भावनात्मक ऊर्जा को सोख लेते है। यह लोग आपके आसपास ही पाए जाते हैं जैसे दोस्त, परिवार का सदस्य, पडोसी, या सहकर्मी हो सकता है। इनकी पहचान ऐसे की जा सकती है कि इनसे बात करने या कुछ समय बिताने के बाद आप अपने आप को भावनात्मक और शारीरिक रूप से थका हुआ, तनावग्रस्त और नकारात्मक महसूस करते हैं। खासकर यदि आप एक सहानुभूतिशील व्यक्ति हैं और अपने आस-पास के लोगों की भावनाओं से बहुत परिचित हैं।

इमोशनल वैंपायर कई तरह के होते हैं। **पीड़ित:** वे लोग जिन्हें लगता है की वे निर्दोष हैं लेकिन पूरी दुनिया हमेशा उनके खिलाफ है। अक्सर अपनी समस्याओं के बारे में शिकायत करते हैं। **आलोचक:** वे लोग जिनके लिए कभी भी कुछ भी अच्छा नहीं होता है और वे किसी भी चीज़ में गलतियाँ निकाल सकते हैं। **नकारात्मक विचारक:** इन लोगो का जीवन के प्रति उनका रवैया बहुत नकारात्मक होता है। **दोष देने वाला:** कुछ लोग दूसरों पर दोष मढ़ने में तेज होते हैं। वे कभी गलती पर नहीं होते लेकिन हमेशा शर्मिंदगी और अपराधबोध का बोझ उठाने को तैयार रहते।

जो लोग बहुत सहानुभूतिशील होते हैं और दूसरों को हमेशा मदद करने के लिए आगे रहते हैं वे लोग ऐसे लोगों की शिकार जल्दी बनते हैं।

इमोशनल वैंपायर बेहद आत्म-केंद्रित होते हैं और हमेशा ध्यान का केंद्र बने रहना चाहते हैं। वे बातचीत पर हावी रहते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि ध्यान हमेशा खुद पर ही रहे। यदि कोई अन्य व्यक्ति कोई अलग विषय उठाता है, तो वे उसे न करने का एक तरीका ढूंढते हैं और ध्यान वापस अपनी ओर लाते हैं। जैसे शुरुआत में वाणी और नमिता की कहानी में वाणी हमेशा नमिता की मदद के लिए तैयार रहती हैं लेकिन नमिता कभी भी वाणी की मदद के लिए आगे नहीं आती क्योंकि नमिता के लिए हमेशा उसकी परेशानिया सबसे बड़ी है और उससे ही हमेशा सहायता की जरुरत है। वे हर चीज़ को वास्तव में उससे कहीं अधिक बड़ा, बेहतर या ख़राब दिखाते हैं।

अक्सर कहा जाता है की अच्छे और सकारातमक लोगों के साथ उठना-बैठना चाहिए और नकारात्मक लोगों से दूर रहना चाहिए। ऐसा इसलिए की बातचीत के द्वारा हम अपनी ऊर्जा का आदान प्रदान करते हैं। इमोशनल वैम्पायर बदले में कुछ भी दिए बिना लोगों का उपयोग करते हैं। आपका सारा ध्यान, देखभाल और भावनात्मक समर्थन चाहते हैं, लेकिन बदले में आपको कुछ भी देने को तैयार नहीं होते।

आप कैसे अपने आप को इमोशनल वैंपायर से सुरक्षित कर सकते हैं:

सीमित संपर्क: यथासंभव उस व्यक्ति से सीमित संपर्क रखे और अपने रिश्ते में सीमाएँ निर्धारित करें।

भावनात्मक ऊर्जा को सुरक्षित रखें: जितना हो सके उनकी शिकायतों पर उन्हें वह प्रतिक्रिया देने से बचने का प्रयास करें जो वे चाहते हैं।

ना कहना सीखें: यदि आप खुद भावनात्मक रूप से कमजोर महसूस कर रहें हों तो खुद को समय दें और दूसरों के भावनात्मक बोझ न उठायें और न कहना सीखें।

नेहा सिंगल
उच्च श्रेणी सहायक
पानीपत - 1, करनाल मंडल

संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियां हैं, शिक्षा सब से बढ़कर है।

राष्ट्रभाषा हिंदी

दुबे जी की कॉलोनी में भारत बसता है । सभी धर्म, सम्प्रदाय और भाषा बोलने वाले वहाँ रहते हैं । दुबे जी हिंदी भाषी है । अकसर दुबे जी अपनी बात रखने में अपने आप को बड़ा असहज महसूस करते थे । एक दिन अचानक महामारी की दूसरी लहर ने कॉलोनी में दस्तक दे दी । एक-एक करके सब चपेट में आ गए। ध्यान और योग के साधक दुबे जी ही केवल बचे थे जो कोरोना का शिकार नहीं हुए । कॉलोनी को हॉटस्पॉट एरिया घोषित कर दिया गया था ।

दुबे जी हैरान थे आखिर क्या किया जाए, दवाई तो इन्हें शासन की ओर से मिल ही रही है पर भोजन इन्हें नहीं मिल पा रहा है ? सभी अपने-अपने तरीके का भोजन करते हैं ? काफी सोच-विचार के पश्चात दुबे जी ने ये निर्णय ले ही लिया कि चाहे इन सभी की पसंद अलग-अलग है लेकिन वे इन तक वही सात्विक भोजन पहुँचाएंगे जो स्वयं लेते है । दुबे जी नियमित रुप से प्रत्येक के घर अपने यहाँ तैयार टिफ़िन पहुँचाने लगे। धीरे-धीरे सभी को भोजन पसंद आने लगा वे अब दुबेजी की भाषा को भी समझने लगे थे । कुछ दिन में सभी ठीक हो गए और दुबेजी से हिंदी में खूब बतियाने लगे । सभी को एक माला में गुथे देख राजभाषा हिंदी सर्व धर्म और संस्कृति से समृद्ध हो कर राष्ट्रभाषा की ऊँचाइयों को प्राप्त कर गई ।

देवेंद्र सिंह सिसौदिया
इंदौर मण्डल कार्यालय

हिंदी का परिचय

हिंदी भारत का परिचय है, भारत की पहचान है
संधि समास अलंकार से, सजी यह भाषा महान है
छंद और रसों का संगम, हिंदी काव्य की जान है
हिंदी का इतिहास पुराना, साहित्य आलीशान है
सहज सरल शब्दों को पिरोती हिंदी देश की आन है
सरल लिखने में मधुर सुनने मे हिंदी गुणों की खान है
संस्कृत से उपजी ये भाषा, ज्ञान का अतुल भंडार है
देवनागरी लिपि है इसकी, पढ़ना लिखना समान है
अक्षर उच्चारण का इसमें बहुत अलग ही प्रभाव है
वैज्ञानिक भाषा कहलाती शब्दकोश विशाल है
11 स्वर और 38 व्यंजन इसके मूल आधार है
कंठ औष्ठ और दंत से निकले वर्णों का ये हार है
संबंधों के स्पष्ट नाम है, नाम से ही पहचान है
आत्मीयता और आदर का, संबोधन से एहसास है
कहावतों और मुहावरों में, छुपे हुए कुछ राज है
शब्दों का क्रम बदले फिर भी, रहता अर्थ समान है
दूसरी भाषा के शब्दों को, दिया उचित सम्मान है
गूगल में भी स्थान मिला है, गर्वित हिंदुस्तान है
कविताओं गीतों की भाषा, कहानियों सिखों की भाषा
विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा, बोली जाने वाली भाषा
जग में चाहे कहीं रहे हम, सुन लेते जब हिंदी भाषा
अपनापन महसूस कराती, अद्भुत है यह हिंदी भाषा
हमें गर्व है हमें मान है, भारत देश की जान ये भाषा
ह्रदय के भाव जुबां पर लाती, अपनी प्यारी हिंदी भाषा

अर्चना देशपांडे
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
शाखा 952

राम तुम्हें फिर आना होगा

महाभारत से इस चित को
रामायण तुम्हें बनाना होगा
बंजर से इस रेगिस्तान को
फिर से हरा बनाना होगा
भौतिकता को जो बना रहे प्राथमिक,
अध्यात्म का मार्ग दिखाना होगा
संयम, त्याग, सत्य, मर्यादा
हैं असली संजीवनी बूटी,
हर मूर्छित लक्ष्मण को
होश में लाना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा

गली गली में विराजे मंथरा
हर कैकई को अब समझाना होगा
कोई ना छोड़े दामन विवेक का
दिलो दिमाग में सामंजस्य बिठाना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा

हैं भयभीत और आशंकित जो
उन्हें निर्भय बनाना होगा
सब निर्भय हों, सब स्वस्थ हों
एक ऐसा अभियान चलाना होगा
हर चित में गुत्थी जो विकारों की
अब तो उसे सुलझाना होगा
अब तो उसे सुलझाना होगा
राम तुम्हें अब आना होगा

भाई भाई से करे प्रेम सदा
हर बाली को समझाना होगा
छल बल से नहीं चलती दुनिया
सत्य का दीप जलाना होगा
सत्य का दीप जलाना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा

जाने कितनी ही अहिलायों का बाकी
उद्धार है
उनका इंतजार मिटाना होगा
छल से तो उसे छला इंद्र ने,
उसे गौतम ऋषि के श्राप से
अब श्रापमुक्त करवाना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा

किसी कुटिया में बैठी होगी
आज भी कोई शबरी,
उसके झूठे बेरों को खाना होगा
श्रद्धा को उसकी देने होंगे दर्शन,
आस्था दीप जलाना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा

हिंसा, असत्य, वासना, भष्टाचार
जाने कितने ही दैत्यों का करना पड़ेगा
संहार
मान आज्ञा पिता की, छोड़ राज पाठ
फिर से वन में तुम्हें जाना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा

गली गली हर नुक्कड़ पर खड़े हैं रावण,
पुतला इनका जलाना होगा
भ्रष्टाचार मुक्त कर मेरे भारत को
राम राज्य फिर लाना होगा
शत्रु गुणी ही गर विभीषण सा
उसको मित्र बनाना होगा
पथ प्रदर्शक बनना होगा पूरी सेना का
सौहार्द का रामसेतु बनाना होगा
फिर पानी होगी विजय रावण पर
फिर घर घर प्रेम का दीप जलाना होगा
नारी अस्मिता की करनी होगी रक्षा
फिर लंका दहन कराना होगा
बुराई पर विजय होगी सदा अच्छाई की,
ऐसा विश्वाश दिलाना होगा
राम तुम्हे फिर आना होगा

लंका सा जो हो गया है मन
अवध सा उसे बनाना होगा
शबरी बजरंगी से अब भक्त कहां ?
ऐसी भक्ति धारा को बहाना होगा
नहीं मिलते सुग्रीव से अब मित्र यहां
मित्रता का अर्थ फिर से बताना होगा
राम तुम्हें फिर आना होगा

स्नेह प्रेमचंद
शाखा हिसार 1

मेरे प्यारे पापा

पिता के होने से घर में कोई गम नहीं,
अगर मां अतुलनीय है तो पिता भी कम नहीं।

समर्पित है चंद पंक्तियाँ दुनिया के हर "पिता" को

"बाबा, ओ मेरे बाबा"

बाबा, आप जानते है,
सब अपने पिता को विश कर रहे है,
"फादर्स डे" है न आज,
पर, आपको एक बात बताऊँ,
मैं आज बलैया ले खुद को ही दे रही हूं,
एक -दो, नही बल्कि अनगिनत बार,

दूँ भी क्यों न,
आप-से पिता जो मिले है मुझे,
बाबा, आज न जाने क्यों,
मेरा मन दशकों पुरानी वासंती सी धुंधली वादियों से,
आनंदी अनमोल यादों के गुलों को बटोरकर,
हर उस लम्हे को महकाना चाहता है,
जो आपके साथ हमने जी भर जिये है,

साथी दोस्तों की तरह,
हमें 'पापा' का टेरर तो बिल्कुल भी न रहा,
परवरिश का आपका अलग अंदाज था,
"मेहनत करो, फल की चिंता न करो"
"कामयाब नही, काबिल बनो",
ये फंडे आपने हमारे साथ कायम किये,
कभी कम नम्बर आने पर,
डाँटने के बजाय आप कॉफ़ी हाउस ले जाते,
छक कर खाने को कहते,

आपका यह कहना कि,
"असफलता से डटकर सामना करो"
"रात गई-बात गई",
नए सिरे से तैयारी शुरू करो,
आपके सिखाये ये सारे बेशकीमती फंडे,
हमे फिर आत्मविश्वास से भर जाते,

आपके दोस्ताना व्यवहार ने न केवल,
दो पीढ़ियों को अटूट बन्धन में बांधे रखा,
बल्कि हर विषय पर आपकी पकड़ होने से,
आस-पड़ोस के बच्चे भी गाहे-बगाहे,
हमारे ही घर में महफ़िल सजाए रहते,

ओकेजन कोई भी हो,
चाहे दोस्तों का या फिर फेमिली गेट-टूगेदर,
हँसी ठहाकों का लंबा सिलसिला चल पड़ता,
हर छोटी बात को चुटकियों के साथ,
रसवंती बनाने के आपके अंदाज ने,
आपको 'महफिल की शान' का टैग पहनाया,

उस समय मेले बहुत लगा करते थे,
बाकी लोग झूले झूलने खाने में व्यस्त होते,
वही आप न जाने कैसे कैसे,
दिमागी कसरत वाले खिलौने जुटाया करते,
इन सबका आपके पास खासा कलेक्शन था,
बच्चों की वानर टोलियों को इनमें,
उलझाए रखने के कारण,
आप 'खेल अंकल' के नाम से जाने जाते,

फोन पर अंतरा अक्सर बताती है,
"मम्मा, नानू से बात करने में बडा मजा आता है",
क्या गजब की नॉलेज है उनकी,
किसी भी फील्ड की बात करा लो,
नई टेक्निक,सोशल मीडिया,
हर जगह उनका नॉलेज अपडेट,
अंतरा ही नही, उसके कलीग भी,
वीडियो कॉल पर आपकी कम्पनी एन्जॉय करते है,

इसकी वजह है,
बड़े होने के नाते,
हमेशा समझाइशें ही देने के बजाय,
नई पीढ़ी को सुनने-समझने की इच्छाशक्ति,
साथ ही,
समय के साथ खुद को ढालने का आपका गुण,
आपकी सुलझी वैचारिक क्षमता,
खुद को क्रिएटिविटी में व्यस्त रखना,
खुद को ही तराशते रहने का आपका स्वभाव,
ये सब आपको 'आम से खास' के साथ ही,
हरदिल अजीज बनाते है,

सच,
जिंदगी किस तरह जीनी चाहिए?
कोई आपसे सीखे,
आपको याद है,
सब आपको 'मास्टर जी' कहते थे,
मजाल थी कि कोई अपने घर रुआंसा आये,
और हँसते हुए न जाये,
आपके आगे कोई भी प्रॉब्लम,
पलछिन में घुटने टेक सरेंडर हो जाया करती,

आज उम्र के इस पड़ाव पर भी,
खुद को व्यर्थ की उलझनों,
नेगेटिविटी से कोंसों दूर रखने के लिए,
"श्वास और विचार" के समुचित तालमेल से,
पॉजिटिविटी के साथ हेल्थी बनाये रखने,
आपने "ब्रह्म विद्या" को रूटीन में शामिल किया,
इससे हमपर पड़ने वाले इफेक्ट को,
लॉजिकली हम सबको समझाया भी,

सच हमेशा की तरह,
आपका ये कदम भी काबिले तारीफ,
और साथ ही अनुकरणीय भी है,

बाबा,
कहने-लिखने-बोलने के लिए तो और भी बहुत कुछ है,
पर उसके लिए शायद,
इस जन्म की बची सांसे भी कम पड़ जाए,

पर बस, यह कहकर कि,
आपका ये खुशनुमा साथ,
आपका सान्निध्य, आपका आशीष,
सदा के लिए हमारे साथ रहे,
यही ईश्वर से प्रार्थना,

बेशक बच्चों के लिए,
"पिता" का कोई विकल्प नही,
पर कभी परिस्थितियों के चलते, तो कभी नियति के चलते,
"पिता" का सान्निध्य आजन्म सबको नही मिलता,

पर कोई न,
"न चिंता न फिकर, ना है डर,"
एक तटस्थ आधार की तरह ही,
जीवन बीमा निगम जो हमेशा,
हरदम - हर कदम साथ है न,
बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने वाले
एक आदर्श पिता की तरह,
वर्तमान और भविष्य को सुरक्षित बनाते,
हमारे जीवन बीमा के दो विश्वसनीय हाथ हैं न,

ये हाथ हर परिस्थिति में साथ का वादा करते है,
जरूरत के हिसाब से पॉलिसियों के माध्यम से,
एक सुकून भरी शीतल छत्रछाया प्रदान करते,
और भावनात्मक-आर्थिक सम्बल करते है,
तो इस "पितृ दिवस",
आप भी बीमा पॉलिसी लेकर,
आजीवन पितृछाया का सुख अपने नाम करें

अंजली खेर
शाखा क्र 2
भोपाल

सुरक्षा से परेः आर्थिक विकास में बीमे की भूमिका की खोज

बीमा को अक्सर अप्रत्याशित वित्तीय नुकसान के खिलाफ सुरक्षा जाल के रूप में देखा जाता है। हालाँकि, इसकी भूमिका सुरक्षा से कहीं आगे बढ़कर आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण चालक बन गई है। इस निबंध में, हम बीमा के बहुमुखी योगदान का पता लगाएंगे, विशेष रूप से भारत के आर्थिक परिदृश्य में भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

बीमा एक जोखिम शमन उपकरण के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों और व्यवसायों के फलने-फूलने के लिए अनुकूल वातावरण बनाता है। अप्रत्याशित घटनाओं के खिलाफ वित्तीय सुरक्षा प्रदान करके, बीमा व्यक्तियों को अधिक आत्मविश्वास के साथ भविष्य के लिए योजना बनाने की अनुमति देता है। यह आत्मविश्वास एक बढ़ी हुई जोखिम लेने की भूख में बदल जाता है, जो व्यक्तियों को शिक्षा, उद्यमिता और दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करता है। व्यवसाय, इसी तरह, संभावित वित्तीय घाटे को कम करके बीमा से लाभान्वित होते हैं, जिससे उन्हें मुख्य गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने, नवाचार और विस्तार को चलाने और आर्थिक विकास में योगदान करने की अनुमति मिलती है।

बीमा दीर्घकालिक पूंजी जुटाने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। बीमा कंपनियों द्वारा एकत्र किए-गए प्रीमियम को विभिन्न क्षेत्रों में निवेश किया जाता है, जिससे बुनियादी ढांचे के विकास, औद्योगिक विस्तार और रोजगार सृजन के लिए धन उपलब्ध कराकर आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। एलआईसी, प्रीमियम के अपने विशाल पूल के साथ, दीर्घकालिक बचत को उत्पादक निवेश में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो भारत के आर्थिक बुनियादी ढांचे और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

एलआईसी की भूमिका व्यक्तिगत सुरक्षा से परे व्यवसायों और उद्योगों के लचीलेपन को बढ़ाने तक फैली हुई है। समूह बीमा पॉलिसियों की अपनी श्रृंखला के माध्यम से, एलआईसी उद्यमों को परिचालन जोखिमों से बचाता है, उन्हें कार्यबल व्यवधानों और अप्रत्याशित आकस्मिकताओं से बचाता है। यह व्यावसायिक अनिश्चितताओं के प्रतिकूल प्रभाव को कम करता है, निवेशकों का विश्वास बढ़ाता है और उद्यमशीलता और औद्योगिक विस्तार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करता है। इसके अतिरिक्त, बीमा वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देता है, व्यक्तियों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली के भीतर लाता है। वित्तीय सेवाओं तक पहुंच प्रदान करके, अनौपचारिक क्षेत्र के लोगों को भी आर्थिक मुख्यधारा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

बीमा संकट के समय सदमे अवशोषक के रूप में कार्य करके अधिक स्थिर आर्थिक वातावरण को बढ़ावा देता है। जब व्यक्तियों या व्यवसायों को अप्रत्याशित घटनाओं के कारण वित्तीय कठिनाई का सामना करना पड़ता है, तो बीमा भुगतान एक बफर प्रदान करता है, जिससे वित्तीय संकट के प्रमुख प्रभाव को रोका जा सकता है। यह आर्थिक स्थिरता तेजी से सुधार की अनुमति देती है और समग्र अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव को कम करती है। एलआईसी, अपनी मजबूत वित्तीय स्थिति और दावा निपटान के प्रति प्रतिबद्धता के साथ, अप्रत्याशित घटनाओं के वित्तीय प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और अधिक लचीले और स्थिर आर्थिक वातावरण में योगदान देती है।

एलआईसी आर्थिक वृद्धि और विकास को गति देने के उद्देश्य से सरकारी पहलों का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। चाहे वह बुनियादी ढांचा परियोजनाएं हों, सामाजिक कल्याण योजनाएं हों, या उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देने की पहल हों, एलआईसी एक विश्वसनीय वित्तीय भागीदार के रूप में कार्य करती है, जो आवश्यक पूंजी निवेश और जोखिम शमन सहायता प्रदान करती है। एलआईसी और सरकार के बीच यह तालमेल सार्वजनिक नीतियों की प्रभावशीलता को बढ़ाता है, आर्थिक सुधारों की गति को तेज करता है और देश को उसकी विकास संबंधी आकांक्षाओं की ओर प्रेरित करता है।

निष्कर्ष: बीमा अपने सुरक्षात्मक कार्य से कहीं आगे तक फैला हुआ है और आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। जोखिमों को कम करने, पूंजी जुटाने, वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और संकट के दौरान स्थिरता प्रदान करके, बीमा देश की आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारत के संदर्भ में, एलआईसी इस विकास को आगे बढ़ाने, व्यक्तियों, व्यवसायों और पूरे देश को अधिक वित्तीय सुरक्षा प्राप्त करने और एक संपन्न अर्थव्यवस्था में योगदान करने के लिए सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसे-जैसे भारत आर्थिक विकास की दिशा में अपनी यात्रा जारी रख रहा है, व्यापक बीमा समाधान प्रदान करने की एलआईसी की प्रतिबद्धता अपने नागरिकों के लिए एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण रहेगी।

अभिषेक मीणा
विक्रय विभाग
शाखा कार्यालय - लक्ष्मीनगर (11D)

घरौंदे में लौटेते पक्षी

रोज़ ही की भाँति घंटी के स्वर और मम्मी कि आरती के मिले- जुले शब्द कानों में पड़ते ही प्रवेश की आंख खुल गयी। पर आज की सुबह उसकी उड़ान के लिए पंख लेकर आने वाली थी। हर्ष और उत्तेजना के मिश्रित भाव के साथ प्रवेश एक क्षण में आलस्य छोड़ उठ खड़ा हुआ। पासपोर्ट ऑफिस में कनाडा जाने के लिए आवेदन देने जो जाना था। हाथ और पैर सभी लयबद्ध तरीके से कार्य कर रहे थे। वही प्रवेश जो रोज़ सुबह मम्मी की मनुहार और पापा की फटकार के बाद भी उठने को तैयार नहीं होता था, आज स्वयं ही भाग- भाग कर तैयारी कर रहा था। परन्तु आज उसने घर के वातावरण में एक अनकही चुप्पी महसूस की। मम्मी और पापा यंत्रवत अपने दैनिक कार्य कर रहे थे। खैर, इन बातों से बेफिक्र प्रवेश अपनी ही धुन में मग्न था। इकलौती संतान होने के कारण शायद वह मम्मी और पापा कि आंख के पोरो का पानी और चेहरे के भावों को पढ़कर भी अनजान रहना चाहता था। उसके बरसों का सपना- की वह भी अपने पंख लगाकर भारत से दूर उड़ जाए- आज पूरा होने जा रहा था। जल्दी जल्दी नाश्ता करके जरूरी कागजात लेकर प्रवेश निकल पड़ा - अपनी उड़ान भरने। पीछे रह गए उसके मम्मी और पापा नितांत व अकेले, एक उम्मीद लगाए- की शायद उसका मन बदल जाए और वह अपनी विदेश जाने कि ज़िद छोड़ दे। मल्टीनेशनल कंपनी में अच्छी नौकरी और सब सुविधाएँ होते हुए भी पता नहीं कौन-सा आकर्षण प्रवेश को उनसे दूर ले जा रहा था। प्रवेश की गाड़ी कि ध्वनि से दोनों की तंद्रा भंग हुई और वे भी भारी मन से अपने कार्यों में लग गए। उधर उत्साही प्रवेश गाड़ी पार्किंग में लगाकर पासपोर्ट ऑफिस में फॉर्म जमा कराने की लाइन में लग गया। तभी उसका ध्यान एक 80 साल के बुजुर्ग दम्पत्ति पर गया जो उसके पीछे बड़ी मुश्किल से प्रतीक्षारत थे। प्रतीक्षा की लाइन बहुत लंबी थी। टाइम पास हो जाए इसलिए प्रवेश ने उनसे बातचीत शुरू की। बातों बातों में ही उसे पता चला कि वे दोनों दम्पत्ति भारत सरकार के उच्चतम पदों से सेवानिवृत्त हुए थे और अपने देश में ही निर्वाण पाना चाहते थे। पर बच्चों की ज़िद थी कि सब कुछ बेच कर उनके पास विदेश आ जाए। दोनों के चेहरे पर अजीब सी बेबसी साफ झलक रही रही थी। तभी लाइन में खड़े वे अंकल प्रचंड गर्मी का कहर और उम्र का तकाजा सहन नहीं कर पाए तथा चक्कर खाकर गिर पड़े। पति को सम्भालते हुए वे बूढ़ी आंटी जी फूटकर रोने लगी - कि जिस लाठी को बुढ़ापे के लिए तैयार किया था, वही उनसे कितनी दूर बैठी है। उस करुण पुकार से अचानक प्रवेश को अपने मम्मी पापा भी ऐसे ही रोते हुए लाइन में खड़े नजर आए। यह सब सोचकर प्रवेश आत्मग्लानि से भर गया। वह क्यों नहीं पढ़ पाया मम्मी और पापा की खामोशी? वह क्यों नहीं देख पाया पूरी रात आंसू बहाती सूजी हुई आंखें जो उसके बिछड़ने की कल्पना से डरी हुई थी। इस आत्मग्लानी ने उसे बेचैन कर दिया और वह सहसा ही अपनी लाइन छोड़ के उस दम्पत्ति के पास गया जो अभी भी अपने शोक से उभर नहीं पाया था। पैर छूकर उनसे आशीर्वाद लिया और मोड़ दी गाड़ी अपने घर की ओर। इतनी जल्दी उसे वापस आया देख मम्मी और पापा दोनों हैरान थे-ये क्या भूल गया? जो वापस वापस आया है। प्रवेश अंदर आते ही एक छोटे बच्चे की भाँति अपनी मम्मी से लिपट गया। जैसे कोई छोटा बालक बिछड़ने के बाद मिलता है अपनी माँ से पापा पूछे जा रहे थे- क्या हुआ? क्या भूल गए जो वापस आ गए? प्रवेश के अंतर्मन से जवाब आ रहे थे - आपको, अपने बचपन को, अपने अस्तित्व को भूल गया था पापा। भूल गया था कि विशाल गगन का चक्कर लगा कर शाम को तो अपने घरौंदे में वापस आना होता है। उसे खुशी भी थी कि समय रहते ही वह भी अपने घरौंदे में लौट आया है। अपने पंखों के साथ साथ अपने वास्तविक धरातल पर मम्मी और पापा को भी मानो अपनी खोई हुई मणि मिल गई हो। शाम ढलते ही अपने घरौंदे में वापस आना सचमुच सुखदायी था।

प्रीति शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी
उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय

अपना आदर्श उपस्थित करके ही दूसरों को सच्ची शिक्षा दी जा सकती है।

अपना सा कोई

थकान सी महसूस होने लगी हैं
जानता हुँ, है ये अफवाह ही शायद
पर अन्दर न जानें क्यों, खलबली सी होने लगी हैं
अरे तो अभी खेला करता था, जिनके साथ सरेराह मैं
उनकी यादें क्यों कर, धुधँलाने सी लगी हैं
जवानी में देखे थे, ख्वाब न जाने कितने सारे
किसी ख्वाब के आस-पास, मैं तो नजर आया ही नहीं
युँ धुँए की तरह उड़ती, निकल गयी जिन्दगी मेरी
कोई निशान कल का, नजर आया ही नहीं
पता नहीं कब, कैसे, क्यों, बदल गए माने जिन्दगी के
ओझल हो गया वो आँचल भी माँ का, जो जिन्दगी सी लगा करती थी
अब हुं अकेला पड़ा, इन खामोश लाशों की भीड़ में
अपनी ही चिता की लकड़ी, सजा रहा मैं गुमसुम सा
हाँ थक सा गया हुं ये हकीकत अब नजर आने लगी है
लाशों से घिरे इस समन्दर में एक और लाश ऊपर आने लगी है

संजय कुमार
उप प्रबंधक, सी.एल.आई.ए.
मंडल कार्यालय, दिल्ली - 1

कायनात

कायनात की हर चीज़ है सुंदर,
उस आलौकिक ईश्वर ने कितना कुछ दिया है

हमको कृपा कर कर,
इस सुंदरता को महसूस कर

तू होकर बेफिकर,
मिल जाएगा जीवन का आनंद

खोल तू खिड़की दरवाजे
ना कर उन्हें बंद
अनुभव कर ठंडी हवा के साथ फूलों की सुगंध

डिजिटल इनोवेशन

स्वीकार्यता > प्रतिबध्दता > कुशलता

डिजिटल इनोवेशन, नव परिवर्तन, नवाचार की हैं वर्तमान प्रासंगिकता,

एलआईसी की नई थीम डिजिटल इनोवेशन:स्वीकार्यता, प्रतिबध्दता, कुशलता ।

एलआईसी में बचत, निवेश से भविष्य की अप्रत्याशित की होती हैं पूर्तता,

बच्चों की पढाई, जॉब और वृध्दावस्था में धन की रहती हैं आवश्यकता।

ब्रांड फाईनेंस इंशोरेंस-100, 2024 की लेटेस्ट रिपोर्ट की प्रासंगिकता,

एलआईसी ही है विश्व का सबसे मजबूत ब्रांड, हैं यह बीमाधारको में स्वीकार्यता ।

एलआईसी ही है बीमाधारक की पसंद एक नंबर, हैं यह बीमाधारको में स्वीकार्यता

एलआईसी पॉलिसी अवश्य होंगी हर व्यक्ति, हर घर पर, हैं यह प्रतिबध्दता।

वादे से दावे तक-एक रिश्ता भरोसे के साथ, हैं यह स्वीकार्यता,

एलआईसी, हर पल बीमाधारक के साथ, हैं यह प्रतिबध्दता ।

डिजिटल इनोवेशन से एलआईसी सुरक्षा उत्कर्ष, वहाँ वहाँ....,

जीवन जहाँ जहाँ....एलआईसी वहाँ वहाँ...., हैं यह स्वीकार्यता, प्रतिबध्दता, कुशलता ।

एलआईसी बीमा ज्योति हैं,67 वर्षों से प्रज्वलित,

एलआईसी में ही है बीमाधारक का हित सुरक्षित, हैं यह स्वीकार्यता, प्रतिबध्दता, कुशलता ।

दिल की सुनिए, एलआईसी ही चुनिए,

एलआईसी हैं न, तो कही ओर न जाईए ।

एलआईसी हर पल बीमाधारक के साथ, हैं यह प्रतिबध्दता,

जिंदगी के भी साथ, जिंदगी के भी बाद, हैं यह बीमाधारको में स्वीकार्यता ।

"योगक्षेमं वहाम्यहम्", ध्येय वाक्य सार्थक कर, इसे अवश्य पहुंचाएंगे हम हर घर,

जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी, एलआईसी है, हर पल बीमाधारक के साथ यह संदेश देंगे, हर घर पर ।

एलआईसी संस्था भी है, डिजिटल इनोवेशन की ओर अग्रेसर,

एलआईसी का 67 वर्षों का बीमाधारक सेवा, स्वीकार्यता, प्रतिबध्दता, कुशलता का सफलतम सफर ।

गजानन भगत
उप प्रबंधक (विपणन), मुख्य जीवन बीमा सलाहकार
मंडल कार्यालय, इन्दौर मण्डल, म.क्षे.

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है-

(1) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों;

(2) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों;

(3) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

टेक्नोलोजी का विकास

मैं टेक्नोलोजी हूँ। मैंने अपने जीवन काल में बहुत से उतार चढाव देखे हैं। किसी के भी जीवन काल में ऐसा नही होता कि वह बिना संघर्ष के अपने सपनों की मंजिल पर पहुँच सके। इसी प्रकार मैंने भी सदैव अनेक कठिनाईओं का सामना करते हुए अपनी मंजिल तक पँहुचने का भरसक प्रयास किया है। मेरे जीवन में मैंने कई क्षेत्रो में उन्नति की है चाहे वह टेलीविजन, टेलिकॉम, कृषि, खाद्य उत्पादन, विज्ञान, व्यापार विकास, स्वास्थ्य चिकित्सा, शिक्षा, यातायात, संचार इत्यादि कोई भी क्षेत्र हो। मैं हर क्षेत्र के विकास के लिए परस्पर प्रयास करती गई। कई बार मुझे सफलता प्राप्त नहीं हुई परन्तु असफलता भी सफलता की ओर बढ़ने का ही एक कदम है । इसलिए मैंने हिम्मत नही हारी और सदा चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रही हूँ। कई जाने माने वैज्ञानिकों ने जैसे स्टीव जॉब, बिल गैट्स, अब्राहिम लिंकन ने भी अपने जीवन में संघर्ष किया और अंत में सफलता प्राप्त की। पहले फिल्म जगत में मूक फिल्म, ब्लैक एंड वाईट और रंगीन फिल्मो और अब सिनेप्लेक्स में नई टेक्नोलोजी का इस्तेमाल यह सब भी मेरे ही विकास का एक उदाहरण है। पहले दूरदर्शन में समाचार, चित्रहार, साप्ताहिक फिल्म आदि से आज गूगल,नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राईम, होटस्टार और भी अनेक चैनेल मेरी सफलता की उड़ान है। मैंने समय के अनुसार कई स्थान पर अपने आप को सुधारने का प्रयत्न किया जैसे विज्ञान के क्षेत्र में नए उपकरण की खोज, चंद्रयान, स्वास्थ्य उपकरण, आनलाईन शिक्षा, आनलाईन व्यापार, यातायात में बदलाव जैसे मेट्रो,हवाई जहाज, हेलिकॉप्टर में भी उन्नति की है । मैंने तकनीकी क्षेत्र में उन्नति करने का भरसक प्रयत्नं किया है क्योंकि यह भी देश की आर्थिक उन्नति का आधार है । इससे देश और दुनिया के विकास की क्रांति में भरपूर योगदान दिया है। मैंने संचार के क्षेत्र में भी कई सुधार किये जैसे ज़ूम काल, व्हात्सप्प, गूगल और भी अनेको एप्लिकैशिन । घर बैठे सामान खरीदने के शौपिंग एप, कोविड काल में घर से आफिस का काम, ओनलाईन शिक्षा, डॉक्टर से चिकित्सा परामर्श आदि मेरे संघर्ष का एक हिस्सा है । मैंने हर पल अपने आपको उन्नत्त करने का प्रयास किया है और यही मेरी सफलता का राज़ है कि मैंने समय के अनुसार अपने आपको अद्यतन करने का प्रयास किया है और आगे भी समयानुसार खुद को विकासशील करती रहूंगी । किसी ने ठीक ही कहा है-

"कर खुद को बुलंद इतना कि आसमान छू सको,
जिंदगी की हर मुश्किल को सफलता से पार कर सको ।

गर तलाश है मंजिल की देर न करो,
खुद पे हौसला रखो और राह पे चलो ।

हर रात के बाद आती है सुबह,
हर हार के बाद आती है जीत
अभी मंजिल है बाकी, अपनी कोशिशे कम न करो ।"

इसलिए अपनी कोशिश जारी रखो, सफलता अपने आप आपके कदम चूम लेगी क्योंकि परिवर्तन भी विकास की एक अनिवार्य सीढ़ी है और मैं भी निरंतर संघर्ष करके अपने आप को और सक्षम बनाने का प्रयत्न करती रहूंगी ।

रिम्मी आनंद
प्रशासनिक अधिकारी
वित्त एवं लेखा विभाग
उत्तर क्षेत्रीए कार्यालय, दिल्ली - I

"बचपन और छुट्टियाँ"

मई जून की चिलचिलाती धूप और गर्मी बड़ों के लिए भले ही तकलीफदेह होती है पर यही गर्मियां अपने साथ लाती है बच्चों के लिए उत्साह और उमंग से भरी छुट्टियां। मुझे याद है बचपन में छुट्टियां होते ही हम अपने गांव दादी के पास चले जाते थे। तब आज के बच्चों की तरह हमें रिज़ल्ट का भय नहीं सताता था, न कहीं घूमने जाने का रिवाज था और ना ही कोई समर क्लास का ट्रेंड था। हमारा तो हर साल का वेकेशन ट्रिप तय होता था दादी के गाँव जाना। वहाँ जाना यानि आने वाले शैक्षणिक सत्र के लिए रीचार्ज होना। तो सुबह चिड़ियों की चहचहाहट सुनकर आंख खुलने के बाद चूल्हे की सौंधी खुशबू वाली चाय से हमारा दिन शुरू होता था। बासी रोटी के ऊपर दादी के हाथ से बिलोये हुए मक्खन को लगाकर कलेवा करके हम तालाब किनारे चले जाते थे और बरसों पुराने बरगद के पेड़ पर उछल कूद करते, पेड़ की रस्सीनुमा लटकती जड़े पकड़कर झूले झूलने में जो मजा आता था वो आज एसी वाले लिविंग रूम में लगे कृत्रिम झूले में लाख ढूंढने से भी नहीं मिलता। घर आकर खाना खाकर हम निकल पड़ते गांव से निकलने वाली नहर में धमाल करने, जो बारह मास बहती थी। नहर पर दिन भर गांव की महिलाओं एवं पुरुषों की रेलमपेल लगी रहती। पानी ज्यादा गहरा ना होने के कारण डूबने का भी कोई खतरा नहीं था। तब किसी वॉटर पार्क की हमें जरूरत नहीं थी। हम घंटों नहर में तैरने का अभ्यास करते और अठखेलियां करने के बाद थककर घर आकर सो जाते। भरी दुपहरी जब दादी हमें घर से बाहर नहीं निकलने देती थी तब बालहंस, चंपक, चाचा चौधरी, नागराज, कैप्टन ध्रुव की कामिक्स और चौपड़, चंगा पो, सांप सीढी, व्यापार जैसे इनडोर गेम्स हमारा सहारा बनते थे। शाम होते ही हम बाहर निकल पड़ते थे कंचे, गुल्ली डंडा, सतोलिया, चोर पुलिस, लुका छुपी जैसे खेल खेलने और ये सब खेलते खेलते कब अंधेरा हो जाता था पता ही नही चलता था। दादी की रसोई में रखे लकड़ी के बक्से में से खाने की चीजें खोजकर खाना, उस छोटी सी परचूनी की दुकान से संतरे और चूरन की गोलियां लेकर खाना, राख से बर्तन चमकाना, खेत में से लकड़ियां इकट्ठी करके लाना, चौके के ऊपर टंगे छींके में रखी ठंडी रोटियां छाछ में भिगोकर प्याज के साथ खाना, बावड़ी से सुबह शाम पानी भरकर लाना ये सारे काम हमारे पसंदीदा थे जिन्हें हम बड़े ही चाव से करते थे। आइसक्रीम वाले को बिना पैसे दिए सिर्फ गेहूं के बदले ऑरेंज आइसक्रीम पाकर खुद को हम किसी राजा से कम नही समझते थे। दादी बताया करती थी कि सुबह और शाम चराने के लिए ले जाए जा रहे गायों और अन्य मवेशियों के खुरों से उड़ती धूल के कारण उस समय को गोधूलि वेला कहते है। देर रात तक गली में बैठकर दादी और मोहल्ले की अन्य बुजुर्ग औरतों के साथ ढोलक की थाप पर भजन गाना, गांव के बड़े बुजुर्गों के मुंह से भूत प्रेत के किस्से सुनना जैसे हर रात का नियम था।

गांव में आधुनिक सुख सुविधाएं कम होने के बावजूद वहां का माहौल हमें शहर से कई ज्यादा भाता था। वहां ना हमें गर्मी सताती थी ना मच्छर। गांव की अंधेरी रात में खुले आसमान तले सोने पर तारों की संख्या और रोशनी दोनों कई गुना ज्यादा दिखाई देती थी। आज की भागदौड़ वाली जिंदगी, शहर की गगनचुंबी इमारतों और फ्लैट्स सिस्टम में खुली छत या आसमान निहारना तो दूर पड़ौस के फ्लैट में रहने वाले की शक्ल देखे भी महीनों बीत जाते है।

एक हमारा बचपन था जिसे हमने सही मायनों में बच्चा बनकर जिया था। अपने नन्हें हाथों में मोबाइल थामे वर्चुअल दुनिया में खोए आज के बच्चों को देखकर कभी-कभी लगता है कि ये पीढ़ी ऐसे बचपन, ऐसी छुट्टियों की कल्पना से भी महरूम है। काश ! वो बचपन, वो छुट्टियां किसी तरह फिर लौटकर आ जाए और मैं फिर से अपने बच्चों को लेकर निकल जाऊं दादी के गाँव, अपना खोया बचपन ढूँढने । शायद वो खोया हुआ बचपन भी गाँव के कुएं की मुंडेर पर बैठा मेरी और मेरे बच्चों की राह तक रहा हो।

प्रतिभा शर्मा
कार्मिक विभाग
अजमेर मंडल कार्यालय

देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी का हिन्दी प्रेम

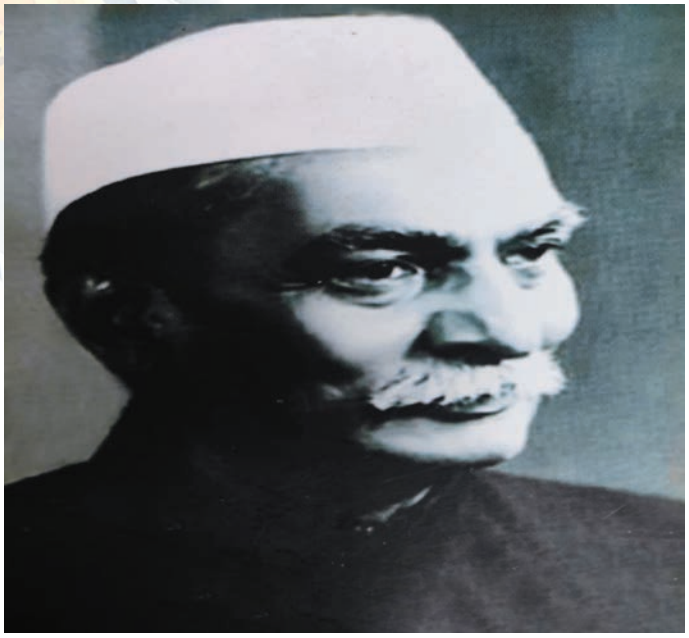

एक समय था, जब नेताओं और राजनीति दोनों के लिए हिन्दी भावनात्मक तथा राष्ट्रीय अस्मिता का मुद्दा था। स्वाधीनता सेनानी तथा भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी का हिन्दी के प्रति लगाव सर्वविदित है। हिन्दी भाषा एवं साहित्य में उनकी गहरी अभिरूचि थी। वे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन से शुरूआती दिनों से जुड़े हुए थे।

राजेन्द्र बाबू ने प्रारंभिक दिनों में फारसी, अँग्रजी, उर्दू, कैथी, देवनागरी लिपि तथा संस्कृत भाषा की पढ़ाई की थी। कॉलेज की परीक्षाओं में उन्होंने उर्दू भाषा चुनी तथा अंग्रजी से किसी अन्य भाषा में अनुवाद करने का प्रश्न आया तो उन्होंने उर्दू में ही अनुवाद किया। किन्तु स्नातक परीक्षा में उन्होंने हिन्दी भाषा चुनी और हिन्दी में निबंध भी लिखा। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी भाषा में अपनी पकड़ का परिचय दिया।

उनके प्रारंभिक स्फुट हिन्दी लेख 'यंग बिहार', पद्म सिंह शर्मा के 'भारतीय' तथा पं. जीवानंद जी शर्मा की 'कमला' एवं अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे थे। तत्कालीन कलकत्ता में पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी तथा हिन्दी के कुछ विद्वानों से उनका परिचय हो गया था, जिससे वे हिन्दी साहित्य परिषद् के कार्यक्रमों में भाग लेने लगे थे। वर्ष 1910 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन कलकत्ता की स्थापना में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। 10 अक्टूबर 1910 को पं. मदन मोहन मालवीय जी की अध्यक्षता में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का पहला अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें राजेन्द्र बाबू की सक्रिय भागेदारी रही। हिन्दी के प्रति उनके गहरे अनुराग को देखते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उन्हें महत्पूर्ण जिम्मेवारियाँ सौंपी गयीं। वर्ष 1912 में कलकत्ता में पं. बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन की अध्यक्षता में हिन्दी साहित्य सम्मलेन का तीसरा अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें राजेन्द्र बाबू स्वागतकारिणी समिति के प्रधानमंत्री बनाये गये। गाँधीजी की अध्यक्षता में 1918 में इंदौर में संपन्न अधिवेशन में राजेन्द्र बाबू ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था। आगे चलकर बिहार के बेतिया में राजा राधिका रमण सिंह जी की अध्यक्षता में संपन्न प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उन्होंने अपनी सक्रियता से लोगों को प्रभावित किया।

आगे चलकर काकिनाडा में 26 दिसम्बर 1923 से कांग्रेस का चार दिवसीय अधिवेशन तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें राजेन्द्र बाबू अध्यक्ष चुने गये; किन्तु रूग्णावस्था के कारण वे इसमें सम्मिलित नहीं हो सके। उनका भाषण जमनालाल बजाज ने पढ़ा। कालान्तर में 1926 में उन्होंने बिहार प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दरभंगा, 1927 में संयुक्त प्रांत के कांगड़ी अधिवेशन तथा 1936 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नागपुर अधिवेशन की भी अध्यक्षता की। यह था उनका हिन्दी के प्रति ज्ञान तथा प्रेम का सम्मान।

गाँधीजी के मार्गदर्शन में उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का दायित्व ग्रहण किया तथा राष्ट्रभाषा परिषद् के क्रियाकलापो में सक्रिय योगदान दिया।

राजेन्द्र बाबू का पटना विश्वविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे सिनेट तथा सिंडिकेट के सदस्य भी थे। उनका स्पष्ट विचार था कि कम से कम मैट्रिकुलेशन स्तर तक की शिक्षा मातृभाषा में ही दी जाय, किन्तु कई लोग उनके इस विचार से सहमत नहीं थें। उनलोगों का मानना था कि इससे छात्र-छात्राओं की वृत्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अंत में सिनेट में राजेन्द्र बाबू ने एक भावुकताभरा तथा विचारोत्तेजक वक्तव्य दिया; जिससे उनके प्रस्ताव को बहुमत से स्वीकार कर लिया गया।

राजेन्द्र बाबू ने दक्षिण भारत तथा अन्य अहिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा इसे राष्ट्रभाषा बनाने का अथक प्रयास किया। सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग तथा सरकारी कर्मियों के लिये हिन्दी प्रशिक्षण योजनायें प्रारंभ करवायी। राष्ट्रपति भवन के निमंत्रण पत्र विज्ञप्ति आदि में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि भी की गयी।

राजेन्द्र बाबू की यह विशिष्ट बात यह है कि वे साहित्य रचना को भी देश के नवनिर्माण का अंग मानते थे तथा साहित्यिकों को समुचित आदर प्रदान कर साहित्य के प्रति अपनी प्रबल आस्था भी प्रकट करते थे। वे अंग्रेजी के विद्धान होते हुए भी हिन्दी के प्रबल अनुरागी तथा समर्थक थे। उन्होंने पटना में 'देश' नामक हिन्दी साप्ताहिक की स्थापना की तथा भाषा के मुद्दे पर परामर्श देकर साहित्य सम्मेलनों का अध्यक्षता करते हुए ग्रंथों की रचना के द्वारा हिन्दी भाषा एवं साहित्य को समृद्ध किया। उनकी लिखी पुस्तकें 'चंपारन में गाँधीजी', 'संस्कृत का अध्ययन', 'आत्मकथा' तथा 'बापू के कदमों में', हिन्दी की अक्षय निधि हैं। 'आत्मकथा' का अधिकांश भाग बांकीपुर जेल, पटना में लिखा गया, जो उनकी स्मृति पर आधारित है। उनकी यह वेदना थी कि 'भारतीय गणतंत्र' का संविधान मौलिक रूप से हिन्दी में नहीं लिखा जा सका। अतः उन्होंने संविधान का हिन्दी रूपांतरण करवाने में महत्पूर्ण भूमिका निभायी।

राष्ट्रपति पद पर कार्यरत रहते हुए संस्कृत जैसी महत्वपूर्ण भाषा सीखने के लिए अत्यंत व्यस्त दिनचर्या में समय निकालकर एक सुयोग्य शिक्षक से शिक्षण लिया। जगत गुरू शंकराचार्य के सम्मान में उन्होंने बिना किसी दुभाषिये के संस्कृत में बातें कीं, जो उनकी विद्वता का प्रमाण है।

12 सितम्बर 1949 से 14 सितम्बर 1949 तक चले संविधान सभा में राजभाषा विषयक मुद्दे को अध्यक्ष के रूप में संजीदगी से सुलझाते हुए सभा की भावना का आदर कर देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिलाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। अंत में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में जो उन्होंने राजेन्द्र बाबू के प्रति कहा है:-

"एक मनुज जिसका शरीर ही बन्दी है पाशों में,
लेकिन, जो जी रहा मुक्त हो जनता की सांसों में,
जिसका ज्वलित विचार देश की छाती में बलता है,
और दीप्त आदर्श पवन में भी निश्चल जलता है,
मिली न जिनको राह, वेग के विद्युत बन आते हैं,
बहे नहीं जो अश्रु, वहीं अंगारे बन जाते हैं,
मानवेन्द्र राजेन्द्र हमारा अहंकार है, बल है,
तपापूत आलोक, देश माता का खड़ग प्रबल है"।

डॉ. मनोज कुमार
उ.श्रे. सहायक (प्रशा.)
विधि एवं गृह वित्त संपत्ति विभाग
पटना मंडल-1

"जिन्दगी एक खोज"

आये हैं इस दुनिया में, कुछ अच्छा करके जाना है
छोटी सी ये जिन्दगी, मुस्कुराते बितानी है।

न जाने कहां खो गई बचपन की दुनिया,
जहां मिलती थी सारी खुशियां ही खुशियां।
नहीं लौटेंगे वो बीते हुए पल,
क्योंकि जिन्दगी का समुंदर गहरा है,
छोटी सी है ये जिन्दगी, मुस्कुराते बितानी है।।1।।

जिन्दगी के हर मोड़ पर, कर्मों की गठरी बांधनी है,
अनुभव के सीख में, अपने आपको तौलना है।
सुख और दु:ख धागों की लडियां, जीवन का वस्त्र सिलना है,
चाहे कितना भी हो महंगा, इक दिन इधर ही छोड़ना है।
छोटी सी ये जिन्दगी, मुस्कुराते बितानी है।।2।।

क्या है ये जिन्दगी ?
ना ही सिर्फ मुसीबत, ना ही सिर्फ हकीकत।
जिन्दगी एक मौका भी है, अपने आप को पहचानने का,
आने वाले सवेरे में, "मैं कौन हूं" खोजने का !

खरीद ले सारे गुब्बारे और पढ़ो गुब्बारे बेचने वाले की चेहरे की खुशी,
जहां लिखी है उसकी शाम की दाल रोटी।

खिलाओ भोजन गौ को और उसकी पीठ पर अपना हाथ फेर,
हो सकता है आपको, उसकी आंखों में करूणा की झलक मिले।
यही है जिन्दगी दुवाओं वाली, अच्छे कर्मों से सजानी है,
आये इस दुनिया में, कुछ अच्छा करके जाना है।

परख लो बुजुर्गों के हंसते चेहरे की झुरियां,
क्या वो सचमुच खुश हैं, या है दिखावा
समझ ले ..... जिन्दगी एक कसौटी है, जिसे संभल के खेलनी है,
छोटी सी ये जिन्दगी, मुस्कुराते बितानी है।।
उम्र बीत जायेगी जिन्दगी को समझते-समझते
लगेगा और बहुत बाकी है इस सफर में,
इसलिये जी भरके जियो जिन्दगी
कभी धूप, कभी छांव वाली।
बचपन, बुढ़ापा या हो जवानी,
जिन्दगी नहीं दोबारा मिलने वाली।
सुख और दु:ख हर घर की कहानी,
किताब एक और पन्ने निराली।
कभी नदी की धारा जैसी,
कभी खड़ी पहाड़ों जैसी।
तुफां में खुद को संभालना है,
छोटी सी ये जिन्दगी, मुस्कुराते बितानी है।।3।।

और जिन्दगी पड़ाव में .....
जिन्दगी की शाम
हर एक की जीवन में होने वाली है।
सपनों की इस दुनिया में,
हर दिन खुशी से जीना है।
क्योंकि .....

जिन्दगी तो है कुछ दिनों की मेहमान
अंतिम सत्य कुछ और है।

छोटी सी ये जिन्दगी, मुस्कुराते बितानी है।

मुस्कुराते बितानी है।
मुस्कुराते बितानी है।

देवयानी सोमण
कार्मिक विभाग,
केन्द्रीय कार्यालय

संकल्प

आओ आज एक संकल्प करें।
निरंतर खुश रहने का अपने आप से वादा करें।
हर विचार, हर सोच को छान लें
आशावादी रहने का एक छोटा सा प्रयास करें।
आओ आज एक संकल्प करें
निरंतर खुश रहने का अपने आप से वादा करें।

मन चंचल है, अस्थिर है।
अतीत मृत है, भविष्य अंजान।
फिर भी ध्यान उसी पर केंद्रित है।
वर्तमान पर गौर कर प्यारे
आने वाला समय है इसके सहारे।

हर किसी की जिन्दगी एक समान है।
फिक्र हर किसी की सोच पर हावी है।
बस देखने, सोचने का नजरिया बदल प्यारे
सफल जीवन तभी होगा तेरे हवाले।

हार जीत का दौर तो लगा रहता है।
पर समय भी तो बलवान है।
दुनिया अवसरों से भरी है, सखा रे
केवल आत्मबल की परीक्षा है प्यारे।

किसी से तू अपनी तुलना न कर।
अपने आप में तू अनोखा है।
खुद पर एतबार कर प्यारे
किसी इम्तिहान में फिर तू कभी न हारे।

मन चाहा ही कार्य तू करना सारे।
पर अंजाम का ख्याल जरूर रखना प्यारे।
किसी की झांसे में न आना तू
क्यूंकि परिणाम तो तुझे ही भुगतने है सारे।

खुशियां ऐसे ही नहीं मिलती
इन्हें खोजना है प्यारे।
सच्चाई का स्वीकार कर तू
किसमें रूचि है अपनी, इसकी तू तलाश कर।
झोंक दे तू इसमें अपने आप को
और खुद की अपनी एक पहचान कर।

बस, आज एक संकल्प कर।
निरंतर खुश रहने का अपने आप से वादा कर।
बस, आज एक संकल्प तू जरूर कर।
निरंतर खुश रहने का अपने आप से वादा कर।

विभा महेश पै
पेंशन एवं समूह बीमा
केन्द्रीय कार्यालय

किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं।

डिजिटल परिवर्तन में हिन्दी का स्थान

कहा जाता है कि 'आवश्यकता अविष्कार की जननी है।' अपने रोजमर्रा के कार्यों को अधिक सुगमता और शीघ्रता से करने की मानव आवश्यकता एवं इच्छा ने वर्तमान समय में डिजिटलाइजेशन के रूप में नए आविष्कार को जन्म दिया है। अभी तक हम केवल 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मात्र कल्पना ही करते थे, परंतु डिजिटल परिवर्तन ने वास्तव में पूरे विश्व को एक छोटे परिवार में ही सीमित कर दिया है। चाहे वह सूचनाओं का आदान-प्रदान हो अथवा भौतिक वस्तुओं का - डिजिटल प्लैटफार्म सभी कार्यों को सुगमता से संपादित करने में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा है।

किन्तु डिजिटलाइजेशन को यदि हम समझें तो यह हमें कार्य को आसानी से एवं शीघ्रता से करने में मदद करता है। अत: आवश्यक है कि हमारे द्वारा दिये गये निर्देश एवं अन्य लोगों द्वारा दिये गए निर्देश पूर्ण रूप से संपादित हो सकें - इसी में डिजिटल परिवर्तन की सफलता निहित है। क्योंकि हिन्दी हमारे देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और भारत की जनसंख्या को देखते हुए डिजिटलाइजेशन में हिन्दी का हस्तक्षेप साफ-साफ परिलक्षित होता है।

उदाहरण के रूप में सभी ऐप आजकल हिन्दी में भी उपलब्ध हैं। भाषा का चुनाव उपभोक्ताओं को सभी डिजिटल प्लैटफार्म पर दिया जाता है। चाहे सोशल-मीडिया साइट हों अथवा ऑनलाइन उपयोग की साइट-अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने में हिन्दी ने डिजिटलाइजेशन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूचनाओं एवं सुविधाओं के प्रचार-प्रसार व संप्रेषण का हिन्दी एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है।

हिन्दी की व्यापकाता को देखते हुए गूगल जैसी कंपनियां भी अपने उत्पादों के प्रचार-प्रसार में हिन्दी की मदद लेने लगी हैं। मेरी व्यक्तिगत जानकारी के अनुसार उन्होंने कुछ समय पहले हिन्दी के जाने-माने कवि कुमार विश्वास को भी आमंत्रित किया। इससे हिन्दी का स्थान विश्वपटल पर साफ-साफ दृष्टिगोचर होता है।

अन्य कंपनियां भी विज्ञापनों के माध्यम से हिन्दी का प्रयोग करके अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने में प्रयासरत हैं।

मेरी आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है वैश्वीकरण के इस दौर में डिजिटल परिवर्तन के माध्यम से ही सही हिन्दी न केवल राष्ट्रभाषा अपितु संपूर्ण विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली एवं प्रयुक्त होने वाली भाषा बन जाएगी।

नीलम त्रिपाठी
बीमांकन विभाग,
केन्द्रीय कार्यालय

भारतीय जीवन बीमा निगम की ई-सेवाएं

भूमिका

अविरल लाक्षणिकता से अलंकृत सूचना अभिशासित संस्कृति के विद्युतीय प्रवाह में व्यावसायिक वैश्विक पटल को अनवरत सन्निहित करता जीवन बीमा व्यवसाय क्षितिज तुल्य लक्ष्यों को भेद नित नव कीर्तिमानों को पुनर्परिभाषित करता एक निर्विवाद यथार्थ सिद्ध कर रहा है। **"उपलब्धियों की उत्कृष्टता" "सूचना प्रौद्योगिकी"** एवं **"कुशल प्रबंधन"** का परिणाम होता है। **"सूचना तंत्र"** सदैव ही **"प्रबंधन"** का अनुक्रमानुपाती रहा है और परिणाम होता है - **"व्यावसायिक सफलता"**।

बदला परिवेश

कोविड - 19 की महामारी ने विश्व को आज हर दृष्टि से बदल दिया है। सामाजिक दूरी के सिद्धांत ने विक्रेता के अनेक लाभ छीन लिए। यह वर्तमान समय का अत्यंत विभीषक अभिशाप था। अत: ये तथ्य महत्वपूर्ण है -

1. परिस्थितियां कहती हैं कि कंपनियों को स्वयं परिवर्तनों को परखना चाहिए जिससे लोगों का समय व धन कम से कम खर्च हो।
2. समय रहित विश्व (The world without time) भौतिक शास्त्र की इस दिलचस्प अवधारणा को हमारे जीवन में पूर्णतया भिन्न परिप्रेक्ष्य में समझने की कल्पना कभी किसी ने नहीं की होगी। सहसा हम यह समझ गए कि समय हमारी इच्छाओं के अनुरूप नहीं बल्कि हमारी वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तनशील होता है।
3. यहां ग्राहक प्रथम है, वह व्यवसाय का आधार है। पर उसकी इच्छाएं अनंत हैं। चूंकि विपणन में प्रतिद्वंदी भी हैं तो प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक है। नीति कहती है कि प्रतिद्वंदी को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। ऐसे में हमारे प्रतिद्वंदी जब साधन व अद्यतन तकनीक से संपन्न हों तो चुनौतीपूर्ण वातावरण होगा ही। व्यवसाय का लाभ हर प्रतिद्वंदी की लालसा है तो वितरण भी समुचित बनाना है जिसे हर व्यक्ति को पाना है व समाज के हर अंग को आच्छादित करना है। अत: कार्यालय, कार्यालय परिसर, विक्रय टीम व सेवा प्रणाली को ग्राहकोन्मुखी बनाना हमारा लक्ष्य है। जिसमें हमारी स्वस्थ मनोभावना के साथ हमारी तकनीक हमारा अवलंब बन सकती है।

डिजिटल माध्यम की अवधारणा

प्रतिस्पर्धा युग में ग्राहक अपेक्षाएं प्रतिक्षण बदलती जा रही हैं। नए ग्राहकों को पाने के साथ पुराने ग्राहकों को संजोए रखना भी एक कठिन कार्य हो गया है। वर्तमान ग्राहकों को जोड़े रखना व्यवसायिक संस्थान की जिजीविषा के लिए महत्वपूर्ण है। डिजिटल माध्यम इस अवधारणा में ब्रहमास्त्र बनकर आया है। सूचना प्रौद्योगिकी व डिजिटल माध्यमों के क्रान्ति-दौर में मोबाइल, इंटरनेट, वाई-फाई, 3जी, 4जी व 5जी डाटा संचरण के माध्यम से ई-मेल, फेसबुक, ट्विटर, कू, वाट्सअप, इंस्ट्राग्राम, स्काइप आदि ने तो वाकई मनुष्य की जिन्दगी बदलकर रख दी है । ग्राहकों की असीमित अपेक्षाओं ने संस्थाओं की सोच को प्रभावित किया है। इस जटिल परिवेश में ग्राहक को उचित और त्वरित सेवा प्रदाता ही इस बाजार में टिक सकेगा।

सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्राहक-संबंध प्रबंधन में जो योगदान मिला है वह बेजोड़ है। डिजिटल माध्यमों ने ग्राहकों से संवाद की स्थिति को वृद्धिगत तो किया ही है इससे ग्राहकों तक व्यक्तिगत पहुंच भी आसान हुई है। परिणामस्वरूप उन्हें "EASY REACH, INSTANT SERVICE" के सिद्धान्त के अनुसार तत्काल सेवाएं मुहैया कराने में सहायता मिली है। आज एक 'क्लिक' या 'टच' से अनगिनत पत्र, संदेश, ई-मेल, अटैचमेन्ट, मुद्रा स्थानान्तरण व सूचना गंतव्य तक विश्व में कहीं भी पहुंच रहे हैं। स्पष्ट है वर्तमान सदी में और संपर्क के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई है।

अद्यतन सुविधाओं के कारण नए ग्राहक आकर्षित होते हैं जो भविष्य में निगम के अस्तित्व को पुख्ता करने में सहायक होंगे। गुणवत्ता में सुधार से ग्राहकों को विभिन्न उत्पादों और विकल्पों के बीच चुनाव का अवसर मिलता है, नेटवर्किंग सहभागिता के कारण लागत में कमी होती है,

न्यूनतम परिचालन लागत आती है, प्रौद्योगिकी तकनीक वैज्ञानिक होने के नाते भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने व सतर्कता (Vigilance) के नियमों के अनुपालन में सहायता मिलती है जिससे ब्राण्ड इमेज का भी लाभ होता है।

ग्राहक केंद्रित ऑनलाइन और डिजिटल अनुभव

सेवा की सुविधाएं विक्रय की पूरक हैं। अत: सेवा प्रदान करने के लिए होने वाले प्रयास को विपणन का अंग मानना कदापि गलत नहीं है। विक्रय एवं सेवा कार्यों में सहयोग दोनों के लिए निगम ने आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग अपनाया है। उसने ग्राहक केंद्रित ऑनलाइन और डिजिटल अनुभव पर आधारित परिचालन संबंधी दक्षता का विकसित मॉडल प्रस्तुत किया है जैसे -

- व्यवसाय व सेवा के क्षेत्र में आंतरिक व बाह्य ग्राहकों के लिए (अन्य चैनल जैसे बैंक सहित) **डिजिटल पटल, ई-सर्विस** की मजबूत उपस्थिति है हमारी।
- हमारा **ग्राहक पटल डिजिटल अनुभव** को विस्तारित करके ऑनलाइन सेवा प्रदान कर रहा है जिस पर **1.5 करोड़ ग्राहक पंजीकृत** हैं। जो लगभग तीन करोड़ पॉलिसियों के धारक हैं। इस पर प्रतिदिन लॉग-इन की संख्या एक लाख प्रयोगकर्ता की है।
- निगम का **मोबाइल एप** एंड्रॉयड और आईओएस दोनों पटलों के लिए है जिस पर **3.5 करोड़ से अधिक प्रयोगकर्ता** हैं। इन पर MPIN आधारित मोबाइल एप्लीकेशन ग्राहक को सरल व सुरक्षित सेवा दे रही हैं।
- कॉल सेंटर सेवा व SMS आधारित सेवा जैसे LICHELP व ASKLIC भी अपने ग्राहकों को उपलब्ध कराई गई है।
- निगम ने कॉरपोरेट वेबसाइट के ऑनलाइन विजिटर की सुविधा के लिए AIMI CHAT BOT का सूत्रपात किया है। जिसका नाम है LIC Mitra। जिसमें विक्रय व सेवा के लिए उपलब्ध प्लान व प्रीमियम भुगतान संबंधी विविध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता है। यह हिन्दी व अन्य भाषाओं में उपलब्ध है जो 97% प्रभाव के साथ ग्राहकों की शंकाओं का समाधान कर रहा है।
- **कस्टमर जोन व सीआरएम सेवा** संबंधी विसंगतियों को वर्षों से दूर करते आ रहे हैं जिनका सार्थक लाभ विपणन को मिल रहा है।
- **पंजीकृत प्रयोगकर्ता**, जिन्होंने प्रारंभिक जानकारी के साथ (बिना KYC पूर्ण किए) ऑन लाइन पंजीकरण कराया है, के लिए निम्न सेवाएं उपलब्ध हैं -
  - नवीनीकरण प्रीमियम, ऋण पर ब्याज जमा।
  - प्रीमियम भुगतान का प्रमाणपत्र
  - ऑन लाइन जमा रसीद
  - पॉलिसी स्थिति/ऋण स्थिति / दावा स्थिति
  - पुनर्चलन दर (कोटेशन)
  - प्रीमियम कैलेण्डर
  - पॉलिसी अनुसूची (शेड्यूल)
- 19 नवंबर 2020 को अभिकर्ताओं हेतु **एजेंट असिस्टेड माड्यूल आनंदा (आत्मनिर्भर एजेंट न्यू बिजनेस डिजिटल एप्लीकेशन)** को लॉन्च किया गया है जो कि पूर्णतया ऑटोमेटेड पेपरलेस नव व्यवसाय माड्यूल है जिस पर अभिकर्ता ग्राहक के सभी डाटा कैप्चर कर सकता है उसको प्रयोग करते हुए अभिकर्ता अपने ग्राहक के सामने रहते हुए ही पॉलिसी पूर्ण कर सकता है।
- 24 दिसंबर 2020 से पुराने ग्राहकों को रोकने के लिए कालातीत हो चुके बीमे के पुनर्चलन हेतु सैटेलाईट अधिकारियों के लिए मोबाइल पर Mobile DocQ ऐप के द्वारा पेपर स्कैन कर पेपर लेस रिवाइवल करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है जो विपणन में सकारात्मक सहयोग करेगा। दूरस्थ शाखाओं से पूर्णावधि दावा के भुगतान प्राप्ति हेतु भी इस ऐप का प्रयोग हो रहा है।
- इस के साथ बड़े बीमा के पुनर्चलन के साथ Contact detail व PAN के साक्षीकृत अंकन के लिए भी शाखाओं में इस ऐप का व्यापक व अनिवार्य उपयोग प्रारंभ हो गया है।

- **"किसी भी पॉलिसी का कहीं भी भुगतान"** की प्रक्रिया को अमल में लाने के लिए इसी ऐप (Mobile DocQ) से किसी भी शाखा के पूर्णावधि दावा भुगतान के प्रपत्र किसी भी शाखा में जमा कराकर भेजने का प्रयोग सफल होता दिख रहा है, बस इसे व्यापक बनाने की जरूरत है।
- NPCI की प्रक्रिया में केन्द्रीय कार्यालय द्वारा जांचे गए खाता वाले पॉलिसी धारकों का दो लाख बीमा धन तक का भुगतान बिना प्रपत्रों के करके दावा भुगतान की प्रक्रिया को सहज, सरल व तीव्र बनाने का प्रयोग भी सफल रहा है।
- पॉलिसी बॉण्ड के छपाई व वितरण की व्यवस्था अन्य एजेंसी से कराकर जहां सेवा में सुधार किया गया है वहीं खर्चे भी कम हुए है।
- प्रीमियम जमा हेतु विविध ई-पोर्टल ने जहां हमारे काउण्टर के बोझ को अस्सी प्रतिशत तक घटा दिया है वहीं अन्य एजेंसी को काउण्टर सौंपने की योजना भी है जो सुरक्षा मानकों से हमारे लिए जोखिम रहित होगा।
- मुंबई में प्रथम डिजिटल प्लेटफॉर्म LIC DIGI ZONE की स्थापना की जा चुकी है।
- पेंशनर के अस्तित्व प्रमाणपत्र के ऑनलाइन अपडेशन के लिए **जीवन साक्ष्य** ऐप का लोकार्पण हो चुका है।
- जो डिजिटल सुविधाएं अभी विचाराधीन है उनमें सर्वप्रमुख है **ई-पॉलिसी** बॉण्ड पर "आनन्दा" ने अब इसे नए कलेवर में प्रतिस्थापित कर दिया है।
- ई-प्रस्ताव लागू है पर अपेक्षित लोकप्रियता अभी तक नहीं प्राप्त कर पाया पर "आनन्दा" ने अब इसे भी नया रूप दे दिया है।

विसंगतियां

इतनी सुविधाओं के बाद भी हमें जिन विसंगतियों का सामना करना पड़ रहा है उन पर एक नजर दौड़ाना समीचीन है -

- ग्रामीण क्षेत्र के अभिकर्ताओं व ग्राहकों दोनों में नई तकनीक की जानकारी का अभाव व जागरूकता की कमी, क्योंकि हमारा 70% व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्र से है, अत: हमारे विकास में बाधक बन रहा है।
- ग्रामीण क्षेत्र में इंटरनेट की कनेक्टिविटी का कमजोर होना हमारा पथ अवरोध है।
- शाखा व मण्डल कार्यालय से दी जाने वाली बाह्य सेवा के लिए इंटरनेट हेतु प्रयोग हो रहे Proxy का धीमापन हमारे लिए घातक है।
- वैधानिक बाध्यताओं के कारण प्रस्ताव आदि प्रपत्र में पृष्ठों की बहुलता और उनका अपर्याप्त रखरखाव भी हमारा सर दर्द है।

निष्कर्ष

कर्मचारियों को उद्यतन प्रौद्योगिकी में कुशल व निपुण बनाते हुए उनकी कार्यक्षमता को निखारना होगा। तकनीक के साथ मानवीय संबंधों पर ध्यान देने की जरूरत है। क्योंकि आज का ग्राहक अत्याधुनिक सुविधाओं के प्रत्यक्ष संबंध के अंतर्गत सम्मान भी प्राप्त करना चाहता है जो हमारा कर्मचारी ही कर सकता है।

कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

(हरिवंशराय बच्चन)

उपसंहार

"चुनौतीपूर्ण समय सदा नहीं रहता चुनौतियों से लड़ने वाले सदा रहते हैं।" अत: कठिनाइयों में अनुकूलता ढूंढना दृढ़ संकल्प व सकारात्मक व्यक्ति के लिए ही संभव है। यही चुनौती डिजिटल माध्यम का आधार है। संकल्प की खुद की एक चेतना होती है, उसका खुद का एक अस्तित्व होता है। संकल्प से उत्पन्न हुए सकारात्मक ऊर्जा की डिजिटल व्यवसाय का परिवर्धित रूप बना है। **अत: सकारात्कता ही जीवन की सिद्धि का मूल मंत्र है।**

मनोज
प्रशानिक अधिकारी
सुल्तानपुर शाखा, उत्तर मध्य क्षेत्र

भारतीय जीवन बीमा निगम 3.0 में डिजिटल परिवर्तन का महत्व

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और यह एक सतत प्रक्रिया है। परिवर्तन का सहर्ष अंगीकार करने वाली प्रजाति ही आगे बढ़ सकी है। पुरा-पाषाण युग से प्रारम्भ हुई मानव सभ्यता ने अनेक पड़ावों को पार करते हुए आज डिजिटल युग में प्रवेश कर लिया है। भारतीय जीवन बीमा निगम भी अपने स्थापना के बाद गत 67 वर्षों में 1956 से 2000 तक **एकाधिकार युग** (भारतीय जीवन बीमा निगम 1.0), उदारीकरण व वैश्विकीकरण की अवधारणा के पश्चात प्रतिस्पर्धी निजी जीवन बीमा कंपनियों के साथ 2000 से 2022 तक **खुला-बाजार युग** (भारतीय जीवन बीमा निगम 2.0) और अब प्रतिभूति बाजार में सूचीबद्ध होकर 17 मई 2022 से लगातार **जन-भागीदारी युग** (भारतीय जीवन बीमा निगम 3.0) में सफलता के साथ निरंतर कदमताल कर रहा है, क्योंकि इसने परिवर्तन को न केवल अंगीकार ही किया है, वरन अग्रणी बनकर ध्वजवाहक भी बना है। बढ़ते डिजिटल प्रयोग के मद्देनजर भारतीय जीवन बीमा निगम भी समयानुकूल प्रक्रिया व प्रणाली से सतत डिजिटल परिवर्तन से अपने कर्मचारी, विक्रय वाहिनी व ग्राहकों के लिए सुविधा प्रदान करने में कहीं भी पीछे नहीं है।

डिजिटल परिवर्तन अब कोई चर्चा का विषय नहीं रह गया है, यह सफलता का एक महत्वपूर्ण घटक है। आज की तेज-तर्रार, प्रौद्योगिकी-संचालित दुनिया में जो उद्योग, संस्थान या कंपनी अनुकूलन और परिवर्तन करने में विफल रह जाते हैं, उनके पीछे छूट जाने का जोखिम रहता है। डिजिटल परिवर्तन (डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन या डीटी) क्या है? डिजिटल परिवर्तन उद्यम के विभिन्न क्षेत्रों में डिजिटल तकनीक को एकीकृत करता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यवसाय के संचालन व अपने ग्राहकों को मूल्य-संवर्धित सेवाएं देने में मूलभूत परिवर्तन होते हैं। ब्रायन सोलिस की परिभाषा यहां पूरी तरह सटीक है, "डीटी का तात्पर्य है ग्राहकों और कर्मचारियों के लिए नए मूल्य लाने के लिए प्रौद्योगिकी, व्यवसाय मॉडल और प्रक्रियाओं का पुनर्गठन या नया निवेश।" डिजिटल परिवर्तन में मैन्युअल प्रक्रियाओं को स्वचालित करने से लेकर नए डिजिटल उत्पादों और सेवाओं को विकसत करने तक विभिन्न गतिविधियां शामिल हो सकती हैं। इसका लक्ष्य प्रौद्योगिकी को अपनाते हुए व्यवसाय को प्रतिस्पर्धी और प्रासंगिक बने रहने में मदद करना है। डीटी का मतलब सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा समर्थित व्यावसायिक प्रक्रियाओं और मॉडलों का आधुनिकीकरण या नवीनीकरण है, अर्थात डिजिटल परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण घटक प्रौद्योगिकी है।

भारतीय जीवन बीमा निगम (या अन्य व्यवसायों) के लिए डिजिटल परिवर्तन क्यों महत्वपूर्ण है? एक वैश्विक वित्तीय समूह होने के कारण भारतीय जीवन बीमा निगम के लिए डिजिटल परिवर्तन महत्वपूर्ण है। बेशक, सबसे प्रमुख उद्देश्य प्रतिस्पर्धा में जीवित रहना और व्यवसाय अभिवृद्धि करना है। लगातार बदलती डिजिटल अर्थव्यवस्था में पुनर्संरेखण प्रभावी ढंग से प्रतिस्पर्धा करने में मदद करता है। यह व्यवसायिक प्रक्रियाओं, संगठनात्मक संस्कृति और ग्राहक अनुभवों को भी बदल देता है। मौजूदा आईटी प्रणालियों में महत्वपूर्ण निवेश की पुष्टि शोध के दौरान सामने आई है। सर्वे रिपोर्ट बताती है कि एक प्रमुख कंपनी अपने बजट का औसतन 72% डीटी पर खर्च करती है। कई संगठन स्टार्टअप्स का मुकाबला करने के लिए डीटी यात्रा शुरू करते हैं। उदाहरण के लिए, परिवहन क्षेत्र में एक एग्रीगेटर के प्रवेश से अन्य कार रेंटल और टैक्सी कंपनियों द्वारा सवारी-साझाकरण सेवाएं शुरू हुईं। इससे पहले कि हम चर्चा करें कि निगम में डिजिटल परिवर्तन क्यों महत्वपूर्ण है, इसके बारे में कुछ त्वरित आंकड़े देख लिये जाएं। आईडीसी वर्ल्डवाइड सेमीएनुअल डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन गाइड में विशेषज्ञों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि डिजिटल परिवर्तन को सक्षम करने वाली प्रौद्योगिकियों और सेवाओं पर दुनिया भर में खर्च सन 2023 में 2.3 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा। मार्केटस एंड मार्केटस के अनुसर, डिजिटल परिवर्तन बाजार सालाना 19.1% बढ़ने की उम्मीद है। विश्व आर्थिक मंच का कहना है कि समाज और उद्योग के लिए डिजिटल परिवर्तन का मूल्य सन 2025 तक 100 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकता है। डेलॉइट के एक सर्वेक्षण के अनुसार, 60% अधिकारयों का मानना है कि कोविड-19 महामारी ने डिजिटल परिवर्तन को गति दी है और यह आने वाले वर्षों में भी प्राथमिकता बनी रहेगी। भारतीय जीवन बीमा निगम के लिए डिजिटल परिवर्तन क्यों महत्वनपूर्ण है और इससे क्या लाभ हैं, इन्हें अग्रलिखित बिंदुओं के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है :-

1. **ग्राहक अनुभव को बदलना** - डिजिटल के केंद्र में ग्राहक अनुभव है। हमारा उच्च नेतृत्व ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए सदा से ही उन्नत रणनीतियां बनाता रहा है।

2. **अधिक डेटा-आधारित अंतर्दृष्टि -** डिजिटल होने से राजस्व वृद्धि, कर्मचारी उत्पादकता आदि की ट्रैकिंग और विश्लेषण की सुविधा मिलता है। डेटा-आधारित अंतर्दृष्टि का उपयोग करने से ग्राहकों को समझने और व्यावसायिक रणनीतियों पर पुनर्विचार करने में मदद मिल सकती है, जिससे बेहतर निर्णय लेने और निवेश पर उच्च प्रतिलाभ (आरओआई) प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

3. **विभागों में व्यापक सहयोग -** डिजिटल परिवर्तन अनुरूपता का निर्माण करके पूरे संगठन में एकता और सहयोग के लिए एक उत्कृष्ट अवसर बनाता है। जब सभी लोग एक समान उद्देश्य से जुड़ते हैं तो कार्य सहज और निर्बाध हो जाता है।

4. **बेहतर चुस्ती और नवीनता -** डिजिटल परिवर्तन चुस्ती और नवाचार के माध्यम से व्यापार वृद्धि को बढ़ावा देता है।

5. **प्रतिस्पर्धात्मक लाभ -** डिजिटल परिवर्तन नए उत्पाद और सेवाएं बनाकर, नए बाजारों में विस्तार कर और ग्राहक समझ व सेवा में सुधार कर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। डीटी नवीन प्रौद्योगिकी-सक्षम उत्पाद और सेवाएं प्रदान करके नई राजस्व धाराएं उत्पन्न करने में भी मदद करता है।

6. **लागत में कमी -** डिजिटल परिवर्तन प्रक्रियाओं को स्वचालित करके, अनावश्यक व समय-बाह्य प्रक्रियाओं को कम करके और आपूर्ति प्रबंधन को अनुकूलित करके लागत को कम करता है, जिसे व्यवसाय विकास में पुनः निवेश किया जा सकता है या ग्राहकों को लाभांश के रूप में दिया जा सकता है।

इससे स्पष्ट है कि डिजिटल परिवर्तन भारतीय जीवन बीमा निगम के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन एक सफल डिजिटल परिवर्तन यात्रा के लिए प्रमुख घटकों का पता लगाना भी आवश्यक है। डिजिटल परिवर्तन के विशिष्ट घटक संगठन के आधार पर भिन्न हो सकते हैं, कुछ प्रमुख घटक भारतीय जीवन बीमा निगम के लिये निम्नलिखित हो सकते हैं।

1. **डिजिटल रणनीति -** डिजिटल परिवर्तन के लिए कई महत्वपूर्ण कारकों की आवश्यकता होती है, लेकिन एक अच्छी तरह से डिजाइन की गई रणनीति के बिना यह बहुत आगे तक मदद करने में सक्षम नहीं होगा। इसलिए महत्वपूर्ण तत्व एक विस्तृत डिजिटल रणनीति है जो परिवर्तन के कारण और अंतिम उद्देश्य पर आधारित हो। डिजिटल परिवर्तन यात्रा शुरू करने के लिए यह परिभाषित करना महत्वपूर्ण है कि हमारे निगम के लिए डिजिटल परविर्तन का क्या अर्थ है ? यह कदम हमें यह पहचानने में मदद कर सकता है कि किन क्षेत्रों पर सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि तदनुसार प्राथमिकता दें।

2. **डेटा एनालिटिक्स -** डिजिटल परिवर्तन आंकड़ों के विश्लेषण के साथ निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाने के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों का उपयोग करता है। जिसमें कई स्त्रोतों से डेटा इकट्ठा करना, विभिन्न उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके इसका विश्लेषण करना और व्यवसाय संचालन को बेहतर बनाने के लिए अंतर्दृष्टि लागू करना शामिल है। डिजिटल परिवर्तन प्रक्रिया शुरू करने के लिए निगम की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

3. **ग्राहकोन्मुखता -** डिजिटल परिवर्तन व्यवसाय को अधिक कुशल, लाभदायक और अद्यतन बनाने के बारे में है। इसे हासिल करने के लिए अपने ग्राहकों की जरूरतों और अपेक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करना होगा और उन जरूरतों को पूरा करने वाले समाधान तैयार करने होंगे। लेकिन वास्तव में "ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण" का सीधा सा मतलब है कि निगम जो कुद भी करता है उसमें ग्राहक को केंद्र में रखना।

4. **प्रक्रियाएं -** प्रक्रियाएं डिजिटल परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकियों का प्रभावी ढंग से लाभ उठाने के लिए प्रक्रियाओं को अनुकूलित करने की आवश्यकता है, जिससे संचालन के तरीकों को अधिक कुशल, प्रभावी और चुस्त बनने में मदद मिलती है, परिणामस्वरूप लागत कम होती है और गुणवत्ता में सुधार होता है। परिवर्तन को संभावित चरणों में विभाजित कर एक विस्तृत रोडमैप बनाएं। सहमति और संरेखण सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक चरण में हितधारकों को शामिल करें। यदि कोई योजना काम नहीं करती तो रास्ता बदलने से न डरें। लचीलापन एक सफल डिजिटल परिवर्तन की कुंजी है।

5. **प्रौद्योगिकी -** डिजिटल परिवर्तन को सक्षम करने के लिए सही प्रौद्योगिकियों में निवेश करने की आवश्यकता है। नवीनतम रूझानों और विकास की बारीकी से जांच कर बदलते डिजिटल परिदृश्य जैसे क्लाउड कंप्यूटिंग, बिग डेटा एनालिटिक्स,

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, एज कंप्यूटिंग, नो- टच समाधान, वर्चुअल परामर्श और अन्य उभरती प्रौद्योगिकियों को शामिल करना होगा।

6. **संस्कृति** - डिजिटल परिवर्तन के लिए नवाचार, चुस्ती और निरंतर सुधार की संस्कृति की आवश्यकता होती है। इसलिए ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना, जो परिवर्तन को स्वीकार करती है और कर्मचारियों को प्रयोग करने और जल्दी से सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है, विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक परिवर्तन डिजिटल परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह चुनौती है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

7. **कार्यदल** - डिजिटल परिवर्तन के लिए कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता होती है, जो नवाचार और परिवर्तन लाने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर सकें। कौशल की पहचान करने के लिए अपने वर्तमान कार्यबल का मूल्यांकन करें। आवश्यक कौशल और क्षमताओं के निर्माण, प्रगति को बनाए रखने के लिए अपने कर्मचारियों के प्रशिक्षण और विकास में निवेश करने की आवश्यकता है। डिजिटल परिवर्तन हासिल करने के लिए सही कौशल और विशेषज्ञता की आावश्यकता है, प्रशिक्षण या नए कर्मचारियों की भर्ती के माध्यम से।

8. **साइबर सुरक्षा** - डिजिटल परिवर्तन पहल के लिए संगठनात्मक डिजिटल संपत्तियों, बौद्धिक संपदा और संवेदनशील ग्राहक जानकारी की सुरक्षा और जीडीपीआर, सीसीपीए और एचआईपीएए जैसी नियामक आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए निगम के पास मजबूत डेटा गोपनीयता और अनुपालन के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है डीटी से जुड़े जोखिमों पर चर्चा, विश्लेषण और दस्तावेजीकरण किया जाए, जिससे एक निर्दिष्ट अवधि में संभावित खतरों की निगरानी कर सकें।

9. **पायलट परीक्षण** - विचार, विश्लेषण, जोखिम मूल्यांकन और योजना के बाद प्रौद्योगिकी का पायलट परीक्षण करने की आवश्यकता होती है। यह कदम योजना लागू करते समय व्यवसाय और संस्कृति पर डीटी के प्रभाव का आकलन करने में मदद करता है। परीक्षण से यह सुनिश्चित करने में भी मदद मिलती है कि हितधारक और कर्मचारी परियोजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए तैयार हैं और जिनके लिये यह कर रहे हैं, उनके लिये ये उपयुक्त है या नहीं।

भारतीय जीवन बीमा निगम, अन्य संगठनों या व्यवसायों के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की शक्ति का उपयोग करने के लिए अपनी प्रभावी डिजिटल परिवर्तन रणनीति की शक्ति एक ब्लूप्रिंट के रूप में कार्य करती है। इसमें व्यवसाय मॉडल को नया रूप देना, उत्पादों और सेवाओं की पुर्नकल्पना करना और ग्राहकों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए नई मूल्य श्रृंखला बनाना जैसी कई पहलें शामिल हैं। डिजिटल परिवर्तन रणनीति के मूल में महत्वपूर्ण व्यावसायिक प्रश्नों के उत्तर निहित हैं - क्या, कौन, कैसे और क्यों ? इन प्रश्नों को संबोधित करना एक प्रभावी डिजिटल परिवर्तन योजना तैयार करने की आधारशिला है, जो निगम के विकास और सफलता को आगे बढ़ा सकती है। डिजिटल परिवर्तन रणनीति जो सभी टीमों के बीच तालमेल सुनिश्चित करता है, परिणामस्वरूप व्यवसाय और उसके ग्राहकों के लिए आवश्यक उत्पादों को वितरित करने पर ध्यान केंद्रित होता है। हालांकि परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है, जिसके लिए समय और प्रौद्योगिकी दोनों की आवश्यकता होती है, फिर भी डिजिटल परिवर्तन रणनीति से मदद मिलती है।

डिजिटल परिवर्तन वैश्विक आंदोलन बन गया है और डिजिटल अर्थव्यवसाय में फलने-फूलने के लिए सार्वभौमिक प्रतिमान के साथ जुड़े रहना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि डिजिटल परिवर्तन एक सतत और निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है। यह पारंपरिक व्यावसायिक मूल्य गणना और वित्तीय प्रशासन विधियों को कम प्रासंगिक बनाता है। दो उद्योगों के संचालन और व्यावसायिक लक्ष्य समान नहीं होते हैं, व्यावसायिक चेतना अपने संगठनों को चलाने के सर्वोत्तम तरीकों पर बहस कर सकते हैं, लेकिन उनमें कई समानताएं हो सकती हैं, सभी चाहते हैं कि उनकी कंपनियां दुर्लभ संसाधनों और मौजूदा प्रौद्योगिकियों का अधिकतम लाभ उठाकर बाजार में आगे बढ़ें और सफल हों। डिजिटल परिवर्तन के लिए निवेश लक्ष्यों को परिभाषित करने की प्रक्रिया अक्सर विस्तृत होती है। इसमें आवश्यक निवेश के प्रकार जैसे स्टाफिंग, बुनियादी ढ़ांचा या प्रौद्योगिकी के बारे में जानकारी इकट्ठा करना और आवश्यक निवेश की विशिष्ट मात्रा का निर्धारण करना शामिल है। यही सफलता की कुंजी है और इसे अपनाकर हमारा निगम निरंतर बुलन्दियों को छूता रहेगा, ऐसा विश्वास है।

मनोज कुमार अटल
प्रशासनिक अधिकारी
केन्द्रीय कार्यालय

निगम के व्यवसाय विकास में राजभाषा का महत्व

प्रस्तावना : 1956 में स्थापित, हमारा भारतीय जीवन बीमा निगम, 67 वर्षों से लोगों के देशहित को पूर्ण करते हुए, देश के हर कोने में बीमा का महत्व समझाते हुए व्यवसाय कर रही भारत की सर्वश्रेष्ठ बीमा कंपनी का मुकुट पहने हुए है। अपनी इस लंबी यात्रा में कई मुश्किलों का सामना करके, अनेक अनुभवों को समेटे, आज भी विश्व के प्रमुख वित्तीय संस्थान और बेहतरीन बीमा कंपनी का स्थान पाए अचल हिमालय की तरह देश का गौरव बने खड़ा है। अपनी उत्कृष्ट सेवाओं ने हमें लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचाया है और हमारे व्यापार करने की शैली ने हमें लोगों के हृदय में स्थान दिया है।

हमारी कामयाबी और प्रगति के मुख्य श्रेय हमारे सशक्त कर्मचारी और विक्रय दल को जाता है जो हमारे निगम के रीड़ की हड्डी बनी हुई है, साथ ही लोगों तक हमारे बीमा के महत्व को समझाने में हमारे राजभाषा हिन्दी का योगदान भी अतुल्य है हिन्दी भाषा की लंबी पहुंच हमारे बीमा व्यवसाय को देश-भर में तथा विदेशों में भी फैलाने में बहुत प्रभावी हुई है। भारत जैसे लोकतंत्र राष्ट्र प्रगति में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है, हिन्दी भारत की सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा होने के साथ विश्व की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा का श्रेय पाई हुई है जो हम सभी भारतीयों के लिए गौरव का विषय है।

'लेकर हिन्दी का हाथ,
बढ़ चलें बीमा के साथ।'

राजभाषा का महत्व :- किसी देश की राजभाषा वही भाषा हो सकती है जिसका उद्गम उसी देश में हुआ हो; उस देश की संस्कृति, सभ्यता और साहित्य से गहरा संबंध हो, जो बोलने समझने में सरल व सुबोध हो और जो देश की सबसे ज्यादा जनता ने अपनाया हो। ये सभी गुण सिर्फ हिन्दी भाषा में है जिस वजह से इसे हमारा राजभाषा का स्थान प्राप्त है। हिन्दी ने अपने मीठे शब्दों से लोगों के हृदय में स्थान पाकर दैनिक कार्यों में सरलता लाकर संपर्क को आसान बनाकर देश के हर क्षेत्र की प्रगति में अपने पदचिन्ह् छोड़े है।

हिन्दी देश की राजभाषा ही नहीं देश के शासन, व्यवहार और हजारों क्षेत्रों का मुख्य संपर्क भाषा है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, जहां हर राज्य और प्रांत की अपनी अलग भाषा और बोली है। भारत में हर चार कोस पर बदले पानी और आठ कोस पर बदले वाणी। इन विविधताओं के बावजूद हिन्दी भाषा ने संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांध रखा है। देश के अनेक कार्यों, खासकर संसद में हर साल करोड़ों खर्च होते थे अनुवाद के कार्य में, जिसे हिन्दी के माध्यम को अपनाकर बचा पाए हैं ताकि यह रकम देश में अन्य प्रगति कार्यों में उपयोग कर सकें।

भाषा, भावों और विचारों के आदान-प्रदान का शसक्त साधन होना चाहिए और इसका मिसाल है हमारी राजभाषा हिन्दी जिसने देश और लोगों को अपनी दैनिक कार्यों में सुविधा प्रदान किया है। वैसे तो भारत में अनेक भाषाएं है पर सभी प्रांत और भाषा-भाषी को जोड़ने का महान काम सिर्फ हिन्दी ही कर पाई है। जैसे गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने कहा था - "भारतीय भाषाएं नदियां है और हिन्दी महानदी।" हिन्दी भारतीय संस्कृति की वाहिका है, विश्व में हमारी पहचान और गौरव है, संस्कृत की बड़ी बेटी और कुशल उत्तराधिकारिणी है।

बीमा व्यवसाय और राजभाषा :- लोगों के जीवन के हर मोड़ पर, उनकी आवश्यकताओं को समझकर, उनके हर परिस्थिति में मददरूप बनकर बीमा सेवाओं को उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाकर भारतीय जीवन बीमा निगम ने अपने लोक-हित का दायित्व बखूबी निभाया है। लोगों ने भी हमारे उत्कृष्ट सेवाओं को पहचानकर हमें सर्वश्रेष्ठता की चोटी पर पहुंचने में साथ दिया है और हमें कई प्रकार के पुरस्कारों से भी सुशोभित किया है हर साल। निगम के प्रगति में राजभाषा का योगदान महत्वपूर्ण है जिसके माध्यम से जन-संपर्क आसान बना और बीमा व्यवसाय करना सरल हुआ है।

भाषा के न जानने से संवाद विहीनता जैसी स्थिति आती है। हमारे देश में बोले जानेवाली सैकड़ों भाषाओं को सीखना-समझना किसी भी मानव के लिए असंभव है। देश के प्रशासन तथा अन्य कार्य-गतिविधियों के लिए किसी एक भाषा को माध्यम बनाना आवश्यक है ताकि कार्य और लक्ष्य प्राप्ति हो। ऐसे भाषा का स्थान हमारी राजभाषा हिन्दी के सिवाय और किसी को नहीं दिया जा सकता। हिन्दी ही देश के प्रगति का राही और सूत्रधार है। आज हमारी राजभाषा देश के बाहर विश्व भर में फैली और बोली जाती है। बीमा व्यवसाय का नींव है - संपर्क, समझ और संवाद। इसका सबसे उत्तम माध्यम है हमारी राजभाषा हिन्दी। हर परिस्थिति को संभाले, संकटविमोचन बने हमारी हिन्दी देश के प्रगति का माध्यम बने खड़ा है।

राजभाषा में सेवाओं के फायदे :- बीमा व्यवसाय का विकास, देश की आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारी हिन्दी भाषा के उपयोग से हुए प्रगति में योगदान सराहनीय है। भारत के अनगिनत भाषाओं को सीखकर उपयोग करने की जगह, राजभाषा हिन्दी मात्र उपयोग करने से निगम अपना व्यवसाय देश के हर कोने तक पहुंचाने में समर्थ रहेगा। हिन्दी संस्कृत से उत्पन्न

अपनी झोली में अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं के शब्द भी समेटे एक मिश्रित बोली है जो लोगों के दिल को छूकर संपर्क आसान बनाया हुआ है। जनप्रिय भाषा होने के कारण हिन्दी के प्रयोग से व्यवसाय चाहे कोई भी हो, करना सरल और प्रभावी बनाता है। बीमा व्यवसाय की कामयाबी है संवाद और विचारों के आदान-प्रदान की शक्ति में, और यह शक्ति हमें अपनी राजभाषा हिन्दी से मिलती है। कर्मचारी और ग्राहक के बीच की भाषा, विक्रय-दल और बीमाधारकों के समझने की भाषा, प्रशासन के माध्यम, सरकार से संपर्क की भाषा - ये सभी के लिए हिन्दी ही अति उत्तम रामबाण है।

हिन्दी भाषा के बीज डालकर हम निगम के बीमा व्यवसाय को और भी फलाफूला देख पायेंगे। इसके लिए कुछ विषयों पर और जोर देना होगा ताकि निगम सदैव सर्वप्रथम बना रहे।

- हमारे सारे जनसंपर्क के माध्यम जैसे पत्राचार, दस्तावेज, नीति नियम के विवरण द्विभाषी ही हों ताकि अंग्रेजी न समझने वाली जनता हिन्दी की मदद से हमारी बात समझे। अगर वह खुद न समझे तो कोई भी उन्हें आसानी से हिन्दी पढ़कर समझा सकते हैं, इसमें अनुवाद की आवश्यकता नहीं। इससे देश भर में बीमा संदेश पहुंचाने में सरलता होगी और साथ ही हम अपने आंतरिक संपर्क देश के कोई भी प्रांत से आसानी से कर पायेंगे। हिन्दी भाषा की लोकप्रियता और लंबी पहुंच के कारण बीमा व्यवसाय और आगे बढ़ने में सक्षम बनेगी और निगम अपने प्रतिद्वंद्वियों को कोसो मील दूर छोड़ अव्वल स्थान बनाए रखने में कामयाब रहेगी।
- हिन्दी के उपयोग देश के हर क्षेत्र और व्यापार में होने के कारण हम अपनी बात आसानी से समझा पायेंगे और निगम अपना बीमा व्यवसाय दिन दुगुनी, रात चौगुनी बढ़ा सकता है।
- विद्यालयों और महाविद्यालयों में बीमा की शिक्षा दें ताकि आने वाली पीढ़ी बीमा का महत्व समझे और इस प्रकार देश के कुछ प्रांत में बीमा व्यवसाय बढ़े। देश के दूरवर्ती गांवों में शिक्षा का माध्यम ज्यादातर प्रादेशिक भाषा या हिन्दी है, इसलिए हिन्दी को बीमा शिक्षा का औजार बनाएं।
- विज्ञापन सैकड़ों लोगों तक पहुंचती है और अगर वह हिन्दी में हो तो लोगों के दिल को छू जाती है। हिन्दी में विज्ञापन देकर, जिंगल के उपयोग से हमारी बीमा पॉलिसियां जनता के दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाएगा। बार-बार उन्हें देखने-सुनने से लोगों के दिल और दिमाग में बस जायेगा और कई बार लोग उन्हें जाने-अनजाने में गुनगुनाते भी हैं। इसके साथ अगर बीमा व्यवसाय करें तो उसमें स्वीकृति के प्रतिशत ज्यादा होंगे।
- डिजिटलीकरण में हिन्दी भाषा को माध्यम बनाकर हम बीमा के बारे में देश के हर छोटे-बड़े शहर या गांव तक संदेश आसानी से पहुंचा सकते हैं। अगर हमारे वेबसाइट, सोशल मीडिया प्रोफाईल और सारे ऑनलाईन एपों में हिन्दी भाषा को भी शामिल करें तो देश-भर में बीमा व्यवसाय फैलने में आसानी के साथ तेजी भी होगी।
- फोन तो आज-कल सभी के पास है, तो बीमा जानकारी एस. एम.एस. द्वारा भी तेजी से फैलाने का विकल्प है। इसके लिए अंग्रेजी और हिन्दी यानी द्विभाषी बनाएं, ताकि बात समझाना आसान हो।

इस प्रकार हिन्दी के लंबे हाथ को थामे निगम अपना बीमा व्यवसाय की जड़ें मजबूत और शाखाएं फैलाने में और सक्षमता प्राप्त कर पायेगी।

उपसंहार :- हमारे देश की कई भाषाओं को जोड़कर, उन्हें एक माला में पिरोकर, उनके शब्दों की मीठी वाणी से विभिन्नताओं को मिटाकर, राष्ट्र की एकता और प्रगति का भाषा बने खड़ा है राजभाषा हिन्दी। सैकड़ों भारतीयों के दिल की धड़कर बने ये देश के हर प्रांत के लोगों को जोड़ने संवाद-संपर्क और व्यवसाय को सरल बनाने का महत्वपूर्ण कार्य बखूबी कर रही है।

"सीखे हिन्दी आज से, बिनु जिसके नहीं काम;
काम नहीं तो धन कहां, धन बिनु नहीं आराम।"

भारतीय जीवन बीमा निगम की 67 वर्ष की यात्रा में राजभाषा से संबंध हमेशा अखंड विश्वास भरा रहा है। हिन्दी को अपने माध्यम बनाने से निगम की ब्रान्ड मूल्य में वृद्धि हुई है। हिन्दी के सहयोग से निगम ने देश के प्रगति और विश्व स्तर पर अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में पाया है। "योगक्षेमं वहाम्यहम्" को साक्षात्कार करके अपने दोनों हाथों से जीवन के दीपक को सतत प्रकाशित रखने का वादा निभाए हुए है भारतीय जीवन बीमा निगम।

"हिन्दी भारत को जोड़ने की भाषा है,
सारे भेद-भावों को तोड़ने की भाषा है;
प्रगति और व्यवसाय को बढ़ाने की भाषा है,
हमारे निगम और देश के संपर्क की भाषा है;
जिसने देश पर ही नहीं विश्व भर में
अपने पदचिन्ह छोड़े-वो हिन्दी भाषा है।।"

चित्रा महेश
सहायक
शाखा कार्यालय- 21, चेन्नई

सबकी हिन्दी, सब हिन्दी के

वर्तमान में जब पूरे विश्व में कोई ना कोई भाषा मर रही है तब हिन्दी जन जन से अपने गहरे सरोकार और संस्कार पूर्ण वैभव के कारण विश्व की अग्रणी तीन भाषाओं में पहुंच चुकी है। जब पूरा विश्व सूचना संक्रांति के दौर में ग्लोबल विलेज बन गया और बाजारवादी शक्तियों का तेजी से उदय हुआ तो 140 करोड़ वाला देश सभी को आकर्षित करने लगा अपनी लंबी भौगोलिक सीमाओं, राष्ट्र से अगाध प्रेम और विशाल लोकतंत्र को मानने वाली जनसंख्या इसके मूल में थे। विदेशियों को भी यहां मुनाफा कमाने के लिए हिन्दी सीखनी पड़ रही है।

'राजा हरिश्चंद्र' और 'आलम आरा' से प्रारंभ हुआ भारतीय सिनेमा 'कल्की' तक आते-आते पूरे विश्व में भारतीय और हिन्दी सिनेमा की उपस्थिति स्थापित कर चुका है। पिछले दिनों प्रधानमंत्री की विदेश यात्रा में जब उनका स्वागत वहां के निवासियों ने हिन्दी गीत और हिन्दी बोलने के साथ किया तो मीडिया कर्मियों ने उनसे पूछा कि आपने हिन्दी कहां से सीखी तो सभी का जवाब था कि हिन्दी सिनेमा से सीखी। आज पूरे देश में जब सिनेमा का व्यवसाय बढ़ चुका है तमिल, तेलगु कन्नड़ और मलयालम फिल्में हिन्दी में डब होकर सफलता के झंडा गढ़ रही हैं और क्षेत्रीय और भाषाई सीमा रेखा के मनो वैज्ञानिक भेद को मिटा रही है तो ऐसा लगता है कि पूरा भारत अब एक भाषा की माला के साथ गुंथ गया है।

यह भ्रम तोड़ने की आवश्यकता है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा है और उन सब प्रादेशिक भाषाएं हैं इस बात को इस प्रकार कहना चाहिए की सारी भाषाएं हमारे राष्ट्र की भाषाएं हैं हम सब राष्ट्रीय हैं तो हमारी भाषा क्यों नहीं राष्ट्र की भाषा का बन सकती। भारत की सभी भाषाओं को अपना-अपना भूगोल है और इस तत्व को झुठ लाया नहीं जा सकता कि इस तुलना में हिन्दी का भूगोल थोड़ा ज्यादा विस्तृत है। अपनी सर्वदेशिकता और सर्वजनिकता के कारण हिन्दी संपर्क भाषा बनी और राज्य के कार्य व्यवहार की भाषा भी हिन्दीको प्रधानता देने में पूरा देश शामिल है।

गैर हिन्दी भाषियों के मन में यह चोर है कि हिन्दी उनकी भाषाओं पर हावी हो जाएगी तो उनकी भाषा समाप्त हो जाएगी। इधर हिन्दी भाषियों के मन में यह चोर है कि हिन्दी का विरोध अंग्रेजी का साम्राज्य विस्तार करने में हो रहा है, अंग्रेजी के रहते हिन्दी का विकास बाधित हो रहा है। दक्षिण के लोग यदि हिन्दी का विरोध ना करें और हिन्दी को अपनी भाषा की बहन स्वरूप भाषा माने तो उनके बच्चों का कार्य क्षेत्र केरल से हिमालय तक विस्तृत हो जाएगा । हिन्दी वालों को भी यह समझना चाहिए कि उनके देश की सभी भाषाएं उनकी है जिनका गला घोट रही है अंग्रेजी। क्योंकि भारत में जितना महत्व और कबीर और तुलसी का है उतना ही सुब्रमण्यम भारती का । रामायण जो 16 से अधिक भाषाओं में लिखी गई सभी का मूल एक ही है और सभी के मूल में है वाल्मीकि रचित संस्कृत रामायण।

यदि हम वैश्विक परिदृश्य में देखें तो आज 90 से अधिक देशों में 150 से अधिक विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्ययन और अध्यापन का कार्य हो रहा है वहीं कुछ राष्ट्रों में हिन्दी दूसरे और तीसरे स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही हैं और 10 से अधिक देशों में हिन्दी कामकाज की प्रमुख भाषा है आज पूरे विश्व में हिन्दी भाषी और भारतीय रह रहे हैं जहां वह हिन्दी से ही अपनी पहचान बना रहे हैं। क्योंकि यह तो मानना होगा कि क्षेत्रीय भाषाओं का विस्तार हिन्दी जितना तो नहीं है।

भारतीय और हिन्दी सिनेमा का प्रमुख आईफा अवार्ड अब विदेश की धरती पर आयोजित हो रहा है जिसमें विदेशियों की उपस्थिति भरपूर है और वह इसका आनंद भी ले रहे है। हिन्दी के प्रचार प्रसार में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान रहा आज भी प्रतिदिन 8 करोड़ से ज्यादा हिन्दी पत्र छपते हैं जिनके पाठक कहीं इससे भी ज्यादा है। इसके बाद इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जो भारत वर्ष में आकाशवाणी और दूरदर्शन के रूप में आया आज विभिन्न चैनलों और संचार माध्यमों के द्वारा घर-घर में अपनी उपस्थिति बनाए हुए यहां तक की विदेशी कंपनियों को अपने उत्पाद बेचने के लिए भी हिन्दी में विज्ञापन देने पड़ रहा है।

आज जब पूरा विश्व ग्लोबल विलेज अर्थात विश्व ग्राम के रूप में परिवर्तित हो गया है विश्व में हिन्दी भाषा को अनदेखा करना अब किसी के बस की बात नहीं एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि हिन्दी

का साहित्य आज पूरे विश्व को अध्ययन के लिए आकर्षित कर रहा है क्योंकि सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक चेतना को जिस प्रकार भारतवर्ष में आत्मसात किया गया वह पूरी दुनिया के लिए अचरज का भी विषय है। क्योंकि कितने आक्रमण और झंझावातों के बाद भी हमारी संस्कृति अक्षुण्ण है और निरंतर प्रगति कर रही है। आज इंटरनेट और विभिन्न सर्च इंजन ज्ञानवर्धन के माध्यम बन चुके हैं जिसमें लोग पूरी दुनिया को अपनी भाषा में समझने का लाभ ले रहे हैं। हमारी सरकार भी नई शिक्षा नीति लाकर इस दिशा में एक और कदम बढ़ा रही है जिसमें कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करेगा जो उसको किसी भी किसी भी विषय वस्तु को समझने में सहायता करेगी।

हमारे संविधान निर्माताओं का भी उद्देश्य पूरे भारत को एक सूत्र में बांधना था जिसके लिए हिन्दी को धीरे-धीरे अंग्रेजी से परिवर्तित करना था। आज आज आवश्यकता है कि हमें अपनी विस्तृत सोच के साथ हिन्दी को लेकर आगे बढ़ना होगा हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए हमें किसी का विरोध नहीं बल्कि अपने स्वयं के तर्कों के साथ आगे बढ़ना होगा हमें हिन्दी साम्राज्यवाद की आशंका से ग्रस्त हिन्दी विरोधियों को यह समझाना होगा कि हिन्दी हमारी भाषा है जबकि अंग्रेजी हमारी भाषा नहीं है अंग्रेजी को विस्तार देने वाली लाल फीताशाही का विरोध करना होगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस कुचक्र को भी दबाना होगा कि हिन्दी किसी की प्रगति में बाधक है। हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं को रोजगार से जोड़ना होगा ताकि अंग्रेजी के प्रति लगाव कम हो सके। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसने अपने अंदर अन्य भाषाओं को बहुत सहजता से स्वीकार किया है किंतु हमें संकल्प शक्ति के साथ आगे बढ़ना होगा।

भूपेन्द्र प्रताप सिंह
प्राचार्य, अभिकर्ता प्रशिक्षण केंद्र
फर्रुखाबाद, आगरा मण्डल

परिभाषाएं

1. **हिंदी में प्रवीणता -** किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है यदि उसने-
   (क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी को माध्यम के रूप में अपनाकर उत्तीर्ण की है; अथवा
   (ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समकक्ष या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को उसने एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था; अथवा
   (ग) वह यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।
2. **हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान -** किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, यदि उसने-
   (i) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है; अथवा
   (ii) केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट वर्ग के पदों के संबंध में निर्धारित कोई निम्नस्तर परीक्षा उत्तीर्ण की है; अथवा
   (iii) केंद्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्धारित कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
   (iv) यदि वह यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

राजभाषा पुरस्कार

ज्ञान प्राप्ति का एक ही मार्ग है जिसका नाम है, एकाग्रता। शिक्षा का सार है, मन को एकाग्र करना, तथ्यों का संग्रह करना नहीं।

हिंदी दिवस

श्री सिध्दार्थ महान्ति,
सी.ई.ओ. एवं प्रबंध निदेशक

श्री कमल कुमार,
क्षेत्रीय प्रबंधक, पश्चिम क्षेत्र

श्रीमती किरण घई

दीप प्रज्वलन

अन्य पदाधिकारी एवं दर्शक गण

मंचासीन माननीय गण

वरिष्ठ अधिकारियों के साथ राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय

द्विभाषी स्टेटमेंट पुस्तक का केंद्रीय कार्यालय में विमोचन

अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी एवं समीक्षा बैठक

22 अगस्त 2024 को वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चंडीगढ़ में अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी एवं समीक्षा बैठक में श्री सलिल विश्वनाथ, कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि./सं.वि.) को विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में निगम द्वारा प्रस्तुत "द्विभाषी मानक प्रपत्र एवं प्रारूप" पुस्तक का विमोचन किया गया।

31वाँ आशिर्वाद राजभाषा पुरस्कार

नराकास TOLIC मुंबई द्वारा संगोष्ठी में राजभाषा कार्यान्वयन के उत्कृष्ट कार्य के लिए भारतीय जीवन बीमा निगम को शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्लान है राइट, फ्यूचर है ब्राइट.

सिर्फ़ ऑनलाइन उपलब्ध

एलआईसी का डिजी क्रेडिट लाइफ़

यूआईएन: 512N358V01 I प्लान नं. 878

एक अप्रतिभागी, असंबद्ध, जीवन, व्यक्तिगत, शुद्ध जोखिम प्लान.

एक शुद्ध जोखिम प्लान जो आपके ऋण पर जोखिम सुरक्षा प्रदान करता है.

- ₹50 लाख की न्यूनतम मूल बीमा राशि.
- उच्च बीमा राशि के लिए प्रीमियम रियायत.
- महिलाओं के लिए विशेष दरें.

LIC / R1 / 2024-25 / 08 / HIN

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

हर पल आपके साथ

LIC मोबाइल ऐप डाउनलोड करें LIC digital

कॉल सेन्टर सर्विस (022) 6827 6827

अधिक जानकारी के लिए www.licindia.in पर जाएं

हमें यहाँ फ़ॉलो करें: LIC India Forever | IRDAI Regn No.: 512

हमारा वॉट्सएप नं. 8976862090 कहिए 'Hi'

नकली फोन कॉल्स और झूठे/धोखाधड़ी पूर्ण ऑफ़र्स से सावधान रहें. आईआरडीएआई जीवन बीमा पॉलिसियों की बिक्री, बोनस घोषित करने या प्रीमियमों के निवेश जैसी गतिविधियों में संलग्न नहीं है. ऐसे फोन कॉल प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से अनुरोध है कि वे पुलिस में इसकी शिकायत दर्ज करवाएँ. **बिक्री समापन से पूर्व अधिक जानकारी या जोखिम घटकों, नियम और शर्तों के लिए बिक्री पुस्तिका को ध्यानपूर्वक पढ़े.**